ISC EXAMINATION PAPER- 2024
HINDI
Class-12th
(Solved)

Maximum Marks: 80
TimeAllowed: Three hours

(Candidates Are Allowed Additional 15 minutes for only reading the paper.
*They must **NOT** start writing during this time)*

*Answer questions-**1**, **2**And **3** in Section A And four other questions from Section **B** on **any three** out of the four prescribed textbooks.*
The intended marks for questions or parts of questions Are given in brackets [].

SECTIONA

LANGUAGE–40 Marks

Question 1 **[15]**

Write a composition in approximately 400 words in Hindi on any ONE of the topics given below.

किसी एक विषय पर हिन्दी में निबन्ध लिखिए जो लगभग 400 शब्दों से कम न हो।

(i) प्रकृति माँ के समान हमारा पालन–पोषण ही नहीं करती बल्कि एक कुशल शिक्षिका की भाँति हमें जीवन की महत्त्वपूर्ण शिक्षा भी देती है। प्रकृति से मिलनेवाली कुछ सीखों का वर्णन करते हुए लिखिए कि किस प्रकार इन सीखो को अपनाकर हम अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं।

(ii) कल्पना कीजिए कि आप सीमा पर तैनात एक सिपाही हैं। परिवार तथा देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का पालन करते हुए आप कैसा महसूस करते हैं? आप अपने परिवार तथा देशवासियों से किस प्रकार के सहयोग की अपेक्षा करते हैं? समझाकर लिखिए।

(iii) आपकी दादी एक लम्बी बीमारी के बाद अभी–अभी स्वस्थ हुई थीं। आप उन्हें घुमाने के लिए किसी प्रसिद्ध स्थल पर ले गए। वहीं अचानक एक ऐसी घटना घटी जिससे आप पूरी तरह से घबरा गए लेकिन आपकी दादी की हिम्मत और सूझ–बूझ के कारण आप उस मुसीबत से बाहर निकले और सकुशल घर वापस आ गए। विस्तारपूर्वक अपने अनुभव का वर्णन कीजिए।

(iv) उपहार देना प्यार जताने और सम्मान करने का परिचायक है पर वर्तमान में उपहार का स्वरूप प्यार कम, व्यापार अधिक हो गया है। इस कथन के पक्ष अथवा विपक्ष में अपने तर्क प्रस्तुत कीजिए।

(v) पहले अपने गली–मोहल्ले की दुकानों से खरीदारी की जाती थी पर अब 'ऑनलाइन' खरीदारी का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। इस परिवर्तन का समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ? समझाकर लिखिए।

(vi) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर मौलिक कहानी लिखिए।

(a) 'कर्जमुक्त मनुष्य ही सबसे सुखी मनुष्य होता है।'

(b) निम्नलिखित वाक्य से अंत करते हुए एक कहानी लिखिए :
'..... और मैं चाह कर भी उस कारुणिक दृश्य को भुला नहीं पाया/पाई।'

Question 2

Read the passage given below carefully and answer the questions that follow, using your own words in Hindi.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और अपने शब्दों का प्रयोग करते हुए दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में दीजिए।

कैसोवैरी चिड़िया जंगल में एक पेड़ के कोटर में रहती थी। वह बचपन से ही बाकी चिड़ियों से अलग थी इसलिए बाकी चिड़ियों के बच्चे उसे हमेशा चिढ़ाते थे।

कोई कहता, "जब तू उड़ नहीं सकती तो चिड़िया किस काम की ?" तो कोई उसे पेड़ की डाल पर बैठकर चिढ़ाता, "अरे। कभी हमारे पास भी आ जाया करो। जब देखो जानवरों की तरह नीचे चरती रहती हो" और ऐसा बोलकर सब–के–सब खूब हँसते।

कैसोवैरी उनकी बातें सुनकर मन मसोसकर रह जाती पर किसी से कुछ कह नहीं पाती थी। शुरू–शुरू में वह इन बातों का बुरा नहीं मानती थी लेकिन किसी भी चीज़ की एक सीमा होती है।

बार–बार चिढ़ाए जाने से उसका दिल टूट गया। वह उदास बैठ गई और आसमान की तरफ़ देखते हुए बोली, "हे ईश्वर,

तुमने मुझे चिड़िया क्यों बनाया ? और बनाया तो मुझे उड़ने की काबिलियत क्यों नहीं दी ? देखो सब मुझे कितना चिढ़ाते हैं। अब मैं यहाँ एक पल भी नहीं रह सकती, मैं इस जंगल को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ कर जा रही हूँ।" ऐसा कहते हुए कैसोवैरी चिड़िया थोड़ा आगे बढ़ गई।

अभी वह कुछ ही दूर गई थी कि पीछे से एक भारी-भरकम आवाज़ आई- "रूको कैसोवैरी! तुम कहाँ जा रही हो ?"

आजतक किसी ने भी कैसोवैरी के साथ इतने अच्छे से बात नहीं की थी। उसने आश्चर्य से पीछे मुड़ कर देखा, वहाँ खड़ा जामुन का पेड़ उससे कुछ कह रहा था।

"कृपया तुम यहाँ से मत जाओ, हमें तुम्हारी ज़रूरत है। पूरे जंगल में हम सबसे अधिक तुम्हारी वजह से ही फल—फूल पाते हैं। वह तुम ही हो जो अपनी मज़बूत चोंच से फलों को अन्दर तक खाती हो और हमारे बीजों को पूरे जंगल में बिखेरती हो। हो सकता है बाकी चिड़ियों के लिए तुम मायने ना रखती हो लेकिन हम पेड़ों के लिए तुमसे बढ़कर कोई दूसरी चिड़िया नहीं है। मत जाओ, तुम्हारी जगह कोई और नहीं ले सकता।"

पेड़ की बातों ने कैसोवैरी के दिल को छुआ। उसकी बातें सुनकर आज पहली बार उसे जीवन में यह एहसास हुआ कि वह इस धरती पर बेकार में मौजूद नहीं है। भगवान ने उसे एक बेहद ज़रूरी काम के लिए भेजा है और सिर्फ़ बाकी चिड़ियों की तरह न उड़ पाना कहीं से उसे छोटा नहीं बनाता। आज कैसोवैरी चिड़िया बहुत खुश थी। वह खुशी-खुशी जंगल में लौट गई।

कैसोबैरी चिड़िया की तरह ही कई बार हम इंसान भी औरों को देखकर खुद में लघुता का अनुभव करते हैं। हम अपने पास की चीज़ों को महत्ता न देकर, ये सोचते हैं कि विधाता ने हमें वे चीज़ें क्यों नहीं दीं जो दूसरों के पास हैं। ऐसी स्थिति में हम खुद को दीन-हीन और दूसरों को सौभाग्यशाली मानकर विधाता को कोसने लगते हैं।

हमें कभी भी बेकार की तुलना में नहीं पड़ना चाहिए। हर एक इंसान अपने आप में अनोखा है और अलग है। हर किसी के अन्दर कोई-न-कोई बात है जो उसे ख़ास बनाती है। हो सकता है कि वह पूरी दुनिया के लिए बस एक इंसान हो लेकिन किसी एक के लिए वह पूरी दुनिया हो सकता है। जीवन की महत्ता को समझकर, उसे सकारात्मक सोच का उपहार देकर हम अपने इस अमूल्य जीवन को और बेहतर बना सकते हैं।

प्रश्नः—

(i) कैसोवैरी चिड़िया सबसे अलग कैसे थी ? बाकी चिड़ियों का व्यवहार उसके साथ कैसा था ? **[3]**

(ii) कैसोवैरी को किससे, क्या शिकायत थी ? उसकी यह शिकायत कैसे दूर हुई ? **[3]**

(iii) हम अपनी ज़िन्दगी को कैसे बेहतर बना सकते हैं ? गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **[3]**

(iv) निम्नलिखित पंक्तियों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प चुनिए

"कृपया तुम यहाँ से मत जाओ, हमें तुम्हारी ज़रूरत है। पूरे जंगल में हम सबसे अधिक तुम्हारी बजह से ही फल-फूल पाते हैं।"

(a) इस कथन के आधार पर जामुन के पेड़ की किन विशेषताओं का पता चलता है ? **[1]**

(1) नम्रता और प्रेम **(2)** अहंकार और दया

(3) करूणा और क्रोध **(4)** धैर्य और गर्व

(b) कैसोवैरी के किस काम की वजह से जामुन का पेड़ फलता-फूलता था ? **[1]**

(1) उसके जामुन न खाने से

(2) उसके कोटर में रहने से

(3) उसके जंगल में बीज बिखेरने से

(4) उसके न उड़ पाने से

(c) कैसोवैरी पर जामुन के पेड़ की बातों का क्या प्रभाव पड़ा ? **[1]**

(1) वह गुस्सा हो गई

(2) उसे अपनी पहचान मिली।

(3) उसने जंगल छोड़ दिया।

(4) वह उड़ना सीखने लगी।

(v) निम्नलिखित पंक्तियों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प चुनिए

"पेड़ की बातों ने कैसोवरी के दिल को छुआ। उसकी बातें सुनकर आज पहली बार उसे जीवन में यह एहसास हुआ कि वह इस धरती पर बेकार में मौजूद नहीं है।"

(a) 'दिल को छुआ' - पंक्ति से क्या आशय है ? **[1]**

(1) भाव-विभोर होना।

(2) मन दु:खी होना।

(3) मन में निराशा उत्पन्न होना।

(4) मन उदासीन होना।

(b) "...वह इस धरती पर बेकार में मौजूद नहीं है।" —पंक्ति से कैसोवैरी के मन के किस भाव का पता चलता है ? **[1]**

(1) उदारता का भाव **(2)** लघुता का भाव

(3) आत्मीयता का भाव **(4)** आत्मविश्वास का भाव

(c) 'मौजूद' शब्द गद्यांश में किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? **[1]**

(1) अस्तित्व के सन्दर्भ में

(2) मायूसी के सन्दर्भ में

(3) झुंझलाहट के सन्दर्भ में

(4) प्रताड़ना के सन्दर्भ में

Question 3

(A) Do as directed:

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(i) निम्नलिखित वाक्य का शुद्ध रूप लिखिए। **[1]**

मैं सायंकाल के समय आया था।

(ii) रिक्त स्थान में सही शब्द भरिए। **[1]**

चुनाव में अपनी करारी हार देखकर नेताजी के पाँव तले ..... खिसक गई।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए

(a) सच ही तो है तरबूज़ को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है।

(b) सच ही तो है खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

(c) सच ही तो है तरबूज को देखकर तरबूज रंग बदलता है।

(d) सच ही तो है खरबूजे को देखकर तरबूजा रंग बदलता है।

(iv) निम्नलिखित वाक्यों में से अशुद्ध वाक्य का चयन कीजिए: **[1]**

(a) प्राकृतिक सौंदर्यता सबका मन मोहती है।

(b) कैदी को मृत्युदण्ड दिया गया।

(c) हमें बड़ों की आज्ञा माननी चाहिए।

(d) हम देशभक्तों को शत-शत नमन करते हैं।

(v) निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित शब्द के लिए सही शब्द का चयन कीजिए:

संकट की घड़ी में ऋण प्रदान करने के लिए श्रीलंका, विश्वबैंक का <u>कृतघ्न</u> है। **[1]**

(a) कृतज्ञ **(b)** कृतार्थ

(c) कृत्य **(d)** कृत्य-कृत्य

(B) Do as directed:

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(i) निम्नलिखित मुहावरे से वाक्य बनाइए। **[1]**

ईंट से ईंट बजाना

(ii) निम्नलिखित मुहावरे को शुद्ध कीजिए। **[1]**

घाट-घाट का खाना खाना

(iii) निम्नलिखित वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए एक सटीक मुहावरे का चयन कीजिए। **[1]**

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने शत्रु सेना के सामने ..... स्वीकार नहीं किया।

(a) खाक छानना **(b)** घुटने टेकना

(c) आग-बबूला होना **(d)** अँगूठा दिखाना

(iv) निम्नलिखित वाक्य के लिए एक सटीक मुहावरे का चयन कीजिए।

अपनी दुकान बेचने के सिवाय उसके पास और कोई उपाय नहीं था। **[1]**

(a) कलेजा मुँह को आना **(b)** गले न उतरना

(c) चारा न होना **(d)** आसमान सिर पर उठाना

(v) निम्नलिखित मुहावरे के सही अर्थ का चयन कीजिए।

पाँचों अँगुलियाँ घी में होना: **[1]**

(a) बहुत लाभ होना **(b)** बहुत भूख लगना

(c) बहुत प्रिय होना **(d)** बहुत खुश होना

SECTION B

LITERATURE–40 Marks

Answer four questions from this Section on any three out of the four prescribed textbooks.

पाठ्यक्रम में निर्धारित चार पुस्तकों में से किन्हीं तीन पुस्तकों के चार प्रश्नों के उत्तर इस भाग से दीजिए।

गद्य संकलन (Gadya Sanklan)

Question 4

उसने अपने सारे साहस को समेटकर दृढ़ता से कहा- "माँ, मैं कानपुर जाऊँगी।"

(i) उक्त कथन से सम्बन्धित पाठ और उसके लेखक का नाम लिखिए। **[1]**

(ii) यह कथन किसने कहा है ? वह कानपुर क्यों जाना चाहती है ? **[2]**

(iii) इस कथन के पीछे वक्ता का क्या उद्देश्य था ? आप किस आधार पर कहेंगे कि वक्ता ने उचित कदम उठाया ? **[2]**

(iv) स्पष्ट कीजिए कि स्वतंत्रता प्राप्ति के आन्दोलन में वक्ता का त्याग भी किसी देशभक्त से कम नहीं था ? **[5]**

Question 5 **[10]**

'किसी के क्षणिक आडम्बर और व्यवहार पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेना घातक सिद्ध हो सकता है।' - 'सती' कहानी के प्रसंग में मदालसा के चरित्र को ध्यान में रखते हुए इस कथन की व्याख्या कीजिए।

Question 6 **[10]**

'भक्तिन' एक कर्मठ नारी के संघर्षमय जीवन की कहानी है। इस कथन को भक्तिन के जीवन के चार अध्यायों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

काव्य मंजरी (Kavya Manjari)

Question 7

'अंतिम बार गोद में बेटी;
तुझको ले न सका मैं हा
एक फूल माँ के प्रसाद का
तुझको दे न सका मैं हा'

(i) प्रस्तुत पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं ? यहाँ 'मैं' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है ? **[1]**

(ii) बेटी ने किससे, क्या इच्छा जाहिर की ? **[2]**

(iii) क्या वक्ता की इच्छा पूरी हो सकी ? कारण सहित उत्तर लिखिए। [2]

(iv) इस कविता में कवि ने किस भेदभाव को उजागर किया है? वह किस प्रकार देश की प्रगति में बाधक है ? समझाकर लिखिए। [5]

Question 8 [10]

सूरदास जी की भक्ति भावना पर प्रकाश डालते हुए संकलित पदों के आधार पर श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं तथा माता यशोदा के वात्सल्य भाव का वर्णन कीजिए।

Question 9 [10]

'जाग तुझको दूर जाना है' कविता में कवयित्री स्वयं के मन तथा मानव मन को क्या संदेश देना चाहती है? कविता की पंक्तियाँ कहीं-न-कहीं हम सब में एक नया उत्साह भरती हैं। कविता के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

'सारा आकाश' (Saara Akash)

Question 10

"बहुत है बहुत है दिवाकर।" कृतज्ञता-गद्‌गद् स्वर में मैंने कहा, "यह हो जाए, दिवाकर, तो मेरा उद्धार हो जाएगा। तू नहीं जानता मैं कितना परेशान हूँ। घर में एक पल को चैन नहीं मिलता .....।"

(i) वक्ता कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [1]

(ii) दिवाकर कौन है ? वह वक्ता को क्या काम दिलवा रहा था ? [2]

(iii) वक्ता की इस पर क्या प्रतिक्रिया थी ? [2]

(iv) "तू नहीं जानता मैं कितना परेशान हूँ। घर में एक पल को चैन नहीं मिलता.....।" इस कथन के आलोक में वक्ता के घर की स्थिति का वर्णन कीजिए। [5]

Question 11 [10]

राजेन्द्र यादव ने समकालीन संदर्भों एवं समस्याओं का मंथन करते हुए 'सारा आकाश' उपन्यास की रचना की है। समर एक ऐसा पात्र है जिसका चरित्रांकन यथार्थवाद के धरातल पर किया गया है। उक्त कथन को ध्यान में रखकर समर का चरित्र चित्रण कीजिए।

Question 12 [10]

'सारा आकाश' केवल समर और प्रभा की ही कथा नहीं है बल्कि इसके माध्यम से लेखक ने पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं को भी उजागर किया है। उपन्यास के आधार पर इस कथन की व्याख्या कीजिए। साथ ही यह भी लिखिए कि आप इस कथन से कितना सहमत हैं और क्यों ?

'आषाढ़ का एक दिन' (Aashad Ka Ek Din)

Question 13

"उनके प्रसंग में मेरी बात कहीं नहीं आती। मैं अनेकानेक साधारण व्यक्तियों में से हूँ। वे असाधारण हैं। उन्हें जीवन में असाधारण का ही साथ चाहिए था। सुना है राज-दुहिता बहुत विदुषी है।"

(i) प्रस्तुत कथन के वक्ता और श्रोता कौन हैं ? [1]

(ii) उक्त कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए। [2]

(iii) वक्ता ने 'असाधारण' किसे कहा और क्यों ? [2]

(iv) उक्त संवाद के आलोक में वक्ता के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। [5]

Question 14 [10]

'राज्याश्रय में रहकर साहित्यकार का लेखन कुंठित हो जाता है।' —'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

Question 15 [10]

'कालिदास जहाँ एक तरफ़ अप्रतिम प्रतिभा के स्वामी हैं, तो वहीं दूसरी तरफ़ उनके स्वभाव में दुर्बलताओं को भी देखा गया है।' — इस कथन को ध्यान में रखते हुए कालिदास का चरित्र—चित्रण कीजिए।

●●●

उत्तरमाला

SECTION-A

LANGUAGE–40 Marks

Answer 1.

(i) भारतीय संस्कृति में यह धारणा प्रचलित है कि परमपिता परमात्मा अर्थात् ईश्वर ने इस जगत में प्रकृति के रूप में स्वयं को प्रतिबिम्बित करना चाहा है। प्रकृति की शक्ति हमें परमात्म-शक्ति का बोध कराती है। प्रकृति की रहस्य भरी सत्ता हमें ईश्वरीय सत्ता की ओर उन्मुख करती है। प्रकृति केवल माँ की तरह हम लोगों का पालन-पोषण ही नहीं करती अपितु एक कुशल अध्यापक की तरह हमें जीवन जीने की कला भी सिखाती है। आज तक विज्ञान के माध्यम से मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का हर सम्भव प्रयास किया है परन्तु प्रकृति का रहस्य अपार है। प्रकृति की देन अनुपम है। कवियों ने सूर्य, चाँद व नक्षत्रों में उस ब्रह्म की ज्योति को अनुभव किया है। तभी तो कवि जायसी कहते हैं- "रवि, ससि, नखत दिपहिं ओहि जोति।"

प्रकृति से हमें अनेक उपयोगी संदेश मिलते हैं। यह हमें मानवता का पाठ पढ़ाती है और जीवन-यापन के आदर्श रूपों से परिचित कराते हुए हमें उदात्त मूल्यों की ओर प्रेरित करती है। जो कुछ भी प्रकृति के पास सम्पदा उपलब्ध है, वह उसे परोपकार में अर्पित कर देती है। प्रकृति से बड़ा परोपकारी कोई नहीं हो सकता।

प्राकृतिक सम्पदा में सबसे पहले वृक्षों की चर्चा करते हैं। वृक्षों के पास जो कुछ भी सम्पत्ति है, वे उसे सहर्ष मानव-समाज को भेंट कर देते हैं और तनिक भी दु:ख या घमंड का अनुभव नहीं करते। वृक्षों की झुकी डालियों की ओर देखता हूँ तो मुझे विनम्रता की शिक्षा मिलती है। जिस वृक्ष पर जितने अधिक फल लदे होंगे, उसकी डालियाँ उतनी ही अधिक झुकी होंगी अर्थात् विजयी होंगी। दूसरी शिक्षा यह है कि वृक्ष कभी अपने फलों का स्वयं उपयोग या उपभोग नहीं करते। यह उनकी परोपकारी प्रवृत्ति का परिणाम है। तभी तो कवि रहीम ने कहा है-

तरवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति संचहिं सुजान॥

जिस प्रकार वृक्ष अपने फलों को परमार्थ के लिए भेंट कर देते हैं उसी प्रकार की प्रकृति नदियों और सरोवरों की भी होती है क्योंकि वे भी अपने जल का स्वयं उपभोग नहीं करते। वे परमार्थ के लिए अपना सारा जीवन व अस्तित्व समर्पित किए रहते हैं। इससे मुझे तथा मानव समाज को यह सुंदर संदेश मिलता है कि हम अपनी सम्पत्ति का उपयोग परमार्थ के लिए करें ताकि समूची मानवता का कल्याण हो सके और इस संसार से विषमता का विष दूर किया जा सके।

प्रकृति के अंग के रूप में नदियों की एक अन्य विशेषता यह है कि वे मानव को निरन्तरता का संदेश देती हैं। उनका जीवन निरन्तर क्रियाशील रहता है और वे अबाध रूप में बहती जाती हैं। वे अपने मार्ग में आने वाले पर्वतों, पत्थरों, चट्टानों तथा अन्य सभी प्रकार के अवरोधों से संघर्ष करती हुई अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहती हैं। इससे हमें यह महान् संदेश मिलता है कि हमें अपने जीवन में कभी भी किसी भी प्रकार की बाधाओं को देखकर विचलित नहीं होना चाहिए। अपना उत्साह तथा साहस बनाए रखना चाहिए। ऐसा करने पर मनुष्य अपने लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य करता है। नदियाँ हमें सहनशीलता का संदेश भी देती हैं। स्वार्थी मानव इनके जल में अनेक प्रकार की प्रदूषित सामग्री डाल जाता है। मैले वस्त्र धोता है। मृत पशु फेंक जाता है। उद्योगों का विषाक्त जल विसर्जित किया जाता है। इस पर भी नदियाँ मौन रहती हैं। वे ये सब चुपचाप सहन करती रहती हैं।

बादल का जन्म ही परकाज के लिए होता है क्योंकि वह बिना किसी निहित स्वार्थ के सारी सृष्टि को जल वितरित करता है। सूर्य, चाँद तथा नक्षत्र हमें नियमबद्धता तथा अनुशासन का महान् संदेश देते हैं। वे अपने निश्चित समय का कभी भी अतिक्रमण नहीं करते। यदि सूर्य मनमानी करने लगे तो सृष्टि का क्या होगा? अत: मानव को यह संदेश मिलता है कि वह अपने जीवन को नियमों तथा मूल्यों के अनुसार अनुशासित करे। धरती माता हमें कितना कुछ देती है। न जाने कितने प्रकार के खनिज इसके गर्भ से मानव प्राप्त कर रहा है। कृषि क्षेत्र में भी धरती का संदेश परोपकार व सहनशीलता की ओर संकेत देता है क्योंकि वह सब प्रकार के प्रहार व आघात सहकर भी मानव को अमूल्य भेंटें अर्पित करती जाती है।

अब फूलों की बात करना भी प्रासंगिक होगा। फूलों का जीवन इस स्वार्थी संसार में हमें परोपकार व दानशीलता का संदेश देता है। फूल अपना सौंदर्य तथा सौरभ मानवता को दान कर डालता है और स्वयं मिट्टी में जा मिलता है। वह हमें इस क्षणभंगुर संसार में हँसते-हँसते जीने व दान करने की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार चट्टानें व पर्वत हमें सिखाते हैं कि जीवन में कठोरता व दृढ़ता का अपना महत्त्व होता है परन्तु हृदय में उसी प्रकार करुणा का निवास होना चाहिए जिस प्रकार उनके हृदय में जल समाया रहता है और अवसर के अनुसार निकलकर मानव का उपकार करता है। इस प्रकार मैं समझता हूँ कि प्रकृति का कण-कण किसी-न-किसी संदेश को अभिव्यक्त करता है। इस तरह हम प्रकृति के द्वारा दिए जाने वाली सीखों को अपनाकर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं।

(ii) सैनिक किसी भी देश की सबसे बड़ी सम्पत्ति में से एक होते हैं। वे राष्ट्र के संरक्षक हैं और हर कीमत पर अपने नागरिकों

की रक्षा करते हैं। इसके अलावा, वे बहुत निस्वार्थ लोग हैं जो देश के हित को अपने व्यक्तिगत हित से ऊपर रखते हैं। एक सैनिक की नौकरी दुनिया में सबसे कठिन कामों में से एक है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे चुनौतीपूर्ण कर्त्तव्यों को पूरा करें और एक महान् सैनिक बनने के लिए उनमें असाधारण गुण हों। हालाँकि, उनका जीवन बहुत कठिन है। बहरहाल, वे कठिनाइयों के बावजूद हमेशा अपने कर्त्तव्यों को पूरा करते हैं।

जब सैनिक अपना कर्त्तव्य निभाता है तो देश चैन की नींद सोता है। एक सैनिक का पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य बिना किसी स्वार्थ के अपने देश की सेवा करना है। एक व्यक्ति आमतौर पर अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम और उसकी रक्षा के लिए सेना में भर्ती होता है। भले ही वे जानते हैं कि उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, फिर भी वे अपने देश के लिए ऐसा करते हैं।

इसके अलावा, एक सैनिक अपने देश के सम्मान की रक्षा करता है। वे विरोधियों के सामने पीछे नहीं हटते बल्कि अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्हें देश के लिए अपनी जान भी देनी पड़ेगी, वे खुशी-खुशी ऐसा करने को तैयार हैं। साथ ही जवानों को भी हर वक्त सतर्क रहना पड़ता है। वह कभी ड्यूटी से बाहर नहीं होता, चाहे वह सो रहा हो या युद्ध के मैदान पर, वह पूरे समय सतर्क रहता है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एक सैनिक का कर्त्तव्य देश में शांति और सद्भाव बनाए रखना है। वह सभी के लिए सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी लेता है। सीमा की रक्षा करने के अलावा, वे आपातकालीन स्थिति में भी हमेशा मौजूद रहते हैं। वे हर स्थिति को सावधानी से सम्भालना सीखते हैं चाहे वह आतंकवादी हमला हो या प्राकृतिक आपदा। दूसरे शब्दों में, स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए स्थानीय अधिकारियों को उनकी आवश्यकता है।

एक सैनिक बनना आसान नहीं है, वास्तव में, यह सबसे चुनौतीपूर्ण कामों में से एक है। उनका जीवन कठिनाइयों और चुनौतियों से भरा होता है जिससे कोई भी सामान्य व्यक्ति नहीं बच सकता। सबसे पहले, वे अपने प्रियजनों से दूर काफ़ी समय बिताते हैं। इससे वे भावनात्मक रूप से परेशान हो जाते हैं और उन्हें छुट्टियाँ भी नहीं मिलतीं। त्योहारों में भी ये देश की सुरक्षा में लगे रहते हैं। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे तब हुआ जब मैंने स्वयं सैनिक के रूप में सीमा पर तैनात होकर देश सेवा की।

इसी तरह, सैनिकों को लड़ाई लड़ने के लिए फिट होने के लिए कठोर प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है। यह थका देने वाला और शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो जाता है, लेकिन फिर भी वे चलते रहते हैं। इससे भी बुरी बात यह है कि उन्हें सामान्य जीवन जीने के लिए पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति भी नहीं मिलती है। कभी-कभी, तो भोजन भी नहीं मिलता है। इसके अलावा कभी-कभी वे बिना किसी सिग्नल के दूरदराज़ के इलाकों में तैनात हो जाते हैं।

इसके बाद, उन्हें सबसे कठिन मौसम की स्थिति में भी काम करना पड़ता है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि भीषण गर्मी है या कंपकंपा देने वाली ठंड, उन्हें युद्ध के मैदान में उतरना ही पड़ता है। इसी तरह उन्हें पर्याप्त बुलेटप्रूफ उपकरण भी नहीं मिलते जो उन्हें सुरक्षित रख सकें। इस प्रकार, हम देखते हैं कि हमारे सैनिक अपने देश की रक्षा के लिए कितना चुनौतीपूर्ण जीवन जीते हैं।

हमारे सैनिक अपने देश की सेवा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं अत: उनके प्रति भी हमारी कुछ ज़िम्मेदारी बनती है क्योंकि वे भी हम देशवासियों से कुछ उम्मीद करते हैं। कम-से-कम हम जहाँ भी अपने देश के सैनिकों को देखें उन्हें सैल्यूट करके उनका हौसला बढ़ाएँ। हमें उनके परिवार वालों का सम्मान करने के साथ-साथ उनकी देखभाल भी करनी चाहिए।

(iii) एक सुनहरी सुबह, ग्रामीण इलाके की दादी, जो हाल ही में एक गंभीर बीमारी से जूझी थीं, खुद को स्वस्थ और सुखी महसूस कर रही थीं। उनकी सूझबूझ और आत्मविश्वास ने उन्हें बीमारी से उबार कर एक सशक्त घराना बनाने की दिशा में मोड़ने में मदद की।

दादी का इलाज महँगा था, लेकिन उनके परिवार ने उन्हें पूरी तरह समर्थन दिया। उनके बच्चे और पोते-पोतियों ने मिलकर उनकी देखभाल की और उन्हें मानसिकता में मज़बूत बनाने में मदद की।

दादी, अपनी समस्या को एक उत्साही अवस्था में देखती हुई, ने खुद को स्वस्थ रहने का निर्णय किया। उन्होंने योग और प्राणायाम का अभ्यास शुरू किया, जिससे उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ। दादी ने अपने आहारशास्त्र को भी सुधारा और स्वस्थ खानपान का पालन करना शुरू किया। उन्होंने अपनी दिनचर्या में बदलाव किया और सकारात्मक विचारधारा अपनाई। और अब वह धीरे-धीरे ठीक होने लगीं।

दादी जब अपने को पूरी तरह स्वस्थ अनुभव करने लगीं तो हम लोगों ने उन्हें गोरखनाथ मंदिर घुमाने ले जाने का निर्णय लिया। दादी भी इस बात से काफ़ी खुश थीं। अगले दिन हम पूरे घर वाले मंदिर पहुँचे। मंदिर में पुजारी मिले, उन्होंने वहाँ के ऐतिहासिक वर्णन के साथ हमें मंदिर दिखाया। अचानक वहाँ मेले का एक झूला टूट गया और कई बच्चे घायल हो गए। सभी तरफ़ अफ़रा-तफ़री का माहौल बन गया। कोई पुलिस बुलाने की बात करता तो कोई एम्बुलेंस। तभी दादी ने वहाँ के लोगों को बताया कि कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि मंदिर का अपना बहुत बड़ा अस्पताल है हमें वहीं चलना चाहिए। सब लोग बच्चों को लेकर वहीं के अस्पताल में गए और इस तरह दादी की सूझ-बूझ से घायल बच्चों का इलाज समय पर हुआ। हम सभी लोगों ने यह अनुभव किया

दादी ने अपनी हिम्मत और समझदारी से छोटे बच्चों की जान बचाई और हम सभी सकुशल वापस घर आ गए।

दादी की सूझबूझ ने उन्हें अपने लक्ष्यों की दिशा में मदद करने की क्षमता प्रदान की। उन्होंने अपने आसपास के लोगों के साथ समझदारी और समर्थन का सम्बन्ध बनाए रखा। उन्होंने अपने अनुभवों को दूसरों के साथ साझा करके उन्हें भी प्रेरित किया कि वे अपने स्वास्थ्य का सही ध्यान रखें। दादी का यह प्रयास न केवल उनके खुद के लिए बल्कि पूरे परिवार और समुदाय के लिए भी एक प्रेरणास्त्रोत बन गया। उनकी सूझबूझ ने उन्हें समस्याओं को स्वीकार करने और उन्हें पार करने की क्षमता प्रदान की।

इस तरह, दादी ने बीमारी से उबरकर मेले में उन छोटे-छोटे बच्चों को समय पर अस्पताल पहुँचाकर उनकी जान बचाई और एक सकुशल जीवन जीने में अपनी सूझबूझ, आत्मविश्वास, और परिवार के साथ मिलकर रहने की मिसाल भी प्रस्तुत की।

(iv) सचमुच उपहार देना प्यार जताना दोनों एक दूसरे के पर्याय लगते हैं लेकिन बहुत बड़ी विडम्बना यह है कि आज के समय में यह प्यार का परिचायक कम और व्यापार का अधिक हो गया है। यह सच है कि वह एक अच्छा आदमी है, जो उपहार अच्छी तरह से प्राप्त कर सकता है। कोई उपहार मिलने पर हमें या तो ख़ुशी होती है या खेद, और दोनों ही भावनाएँ अशोभनीय हैं। मुझे लगता है कि जब मैं किसी उपहार पर खुशी मनाता हूँ या दु:खी होता हूँ, तो कुछ हिंसा की जाती है, कुछ अपमान सहना पड़ता है। मुझे खेद है जब मेरी स्वतंत्रता पर आक्रमण होता है, या जब कोई उपहार ऐसे लोगों से आता है जो मेरी आत्मा को नहीं जानते हैं, और इसलिए अधिनियम का समर्थन नहीं किया जाता है; और यदि दान मुझे बहुत प्रसन्न करता है, तो मुझे लज्जित होना चाहिए, कि दाता मेरे हृदय को पढ़े, और देखे कि मैं उसकी वस्तु से प्रेम करता हूँ, उससे नहीं। उपहार, सच होने के लिए, देने वाले का मेरी ओर प्रवाहित होना चाहिए, मेरे उसके प्रति प्रवाहित होने के अनुरूप होना चाहिए। उसका सब मेरा है, मेरा सब उसका है। इसलिए उपहारों के लिए उपयोगी नहीं बल्कि सुंदर चीज़ों की उपयुक्तता करनी चहिए। हम उपहार के मूल्य पर बिल्कुल भी विचार नहीं करते हैं, लेकिन उस बड़े स्टोर को देखते हैं जहाँ से इसे लिया गया था, मैं लाभार्थी के प्रति सहानुभूति रखता हूँ।

मैं इन मतभेदों का कारण यह मानता हूँ कि मनुष्य और किसी भी उपहार के बीच कोई समानता नहीं है। आप किसी उदार व्यक्ति को कुछ नहीं दे सकते। आपकी सेवा करने के बाद, वह तुरंत अपनी उदारता से आपको कर्ज़दार बना देता है। एक आदमी अपने मित्र की जो सेवा करता है वह तुच्छ और स्वार्थी है, उस सेवा की तुलना में जब वह जानता है कि उसका मित्र उसे देने के लिए तैयार है, पहले भी वह अपने मित्र की सेवा करना शुरू कर चुका था और अब भी। मैं अपने मित्र को जिस सद्भावना के साथ सहन करता हूँ, उसकी तुलना में उसे जो लाभ पहुँचाना मेरी शक्ति में है, वह छोटा लगता है। इसके अलावा, एक-दूसरे पर हमारी कार्रवाई, अच्छा और बुरा, इतना आकस्मिक है, कि हम शायद ही किसी ऐसे व्यक्ति की स्वीकृति सुन सकते हैं जो बिना किसी शर्म और अपमान के, हमारे लाभ के लिए हमें धन्यवाद दे। हम शायद ही कभी सीधा प्रहार कर पाते हैं, लेकिन तिरछे प्रहार से ही संतुष्ट रहना पड़ता है; हमें शायद ही कभी प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करने की संतुष्टि होती है, जो सीधे प्राप्त होता है। परन्तु सीधाई बिना जाने सब ओर से उपकार बाँटती है, और सब मनुष्यों का धन्यवाद आश्चर्य से ग्रहण करती है।

मैं प्यार की महिमा के खिलाफ़ किसी भी तरह का विश्वासघात करने से डरता हूँ, जो प्रतिभा और उपहारों का देवता है, और जिसे हमें प्रभावित नहीं करना चाहिए। वह उदासीनता से राज्य या फूल-पत्तियाँ दे। ऐसे व्यक्ति हैं, जिनसे हम हमेशा पूरी टोकन की अपेक्षा करते हैं; आइए हम उनसे अपेक्षा करना न छोड़ें। यह विशेषाधिकार है, और हमारे नगरपालिका नियमों द्वारा सीमित नहीं है। बाकी, मुझे यह देखना पसंद है कि हमें खरीदा और बेचा नहीं जा सकता। सर्वोत्तम आतिथ्य और उदारता भी इच्छा में नहीं, बल्कि भाग्य में है। मुझे लगता है कि मैं आपके लिए कुछ खास नहीं हूँ; तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं है; तुम मुझे महसूस नहीं करते; तो फिर चाहे तू मुझे घर और भूमि दे, तबभी मैं घर से बाहर निकाल दिया जाता हूँ। किसी भी सेवा का कोई मूल्य नहीं है, बल्कि केवल समानता है। जब मैंने सेवाओं द्वारा स्वयं को दूसरों से जोड़ने का प्रयास किया, तो यह एक बौद्धिक चाल साबित हुई,अब और नहीं। वे आपकी सेवा को सेब की तरह खाते हैं, और आपको छोड़ देते हैं। परन्तु उनसे प्रेम करो, और वे तुम्हें महसूस करते हैं, और हर समय तुमसे प्रसन्न रहते हैं। अत: हमें किसी को कुछ भी भेंट देनी हो तो इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि उस वस्तु के देने में प्रेम हो न कि व्यापार।

(v) तकनीकी प्रगति हमारे मानकों और जीवनशैली को बदल रही है। तकनीक में दिन-प्रतिदिन बदलाव हो रहे हैं। ऑनलाइन शॉपिंग आकर्षक पहलू तकनीक में से एक है। यह वह विधि है जिसमें व्यापार और लेनदेन इंटरनेट पर किए जाते हैं। ग्राहकों को विभिन्न वेबसाइटों पर वांछित उत्पाद और सेवाओं को खोजने और चुनने का विकल्प प्रदान किया जाता है और दूसरे छोर पर इसे निर्देशित पते पर वितरित किया जाता है। विक्रेता हमें कई अलग-अलग वेबसाइटें भी प्रदान कर रहे हैं जहाँ तमाम तरह के उत्पाद और सेवाएँ मिल रहीं हैं। इन दिनों लोगों को कई तरह के काम के दबावों से जूझना पड़ता है। वे अपना अधिकांश समय कार्यालयों या अन्य महत्त्वपूर्ण कामों में बिता रहे हैं। खरीदारी के पारम्परिक तरीकों के लिए, अलग-अलग उत्पादों के लिए, अलग-अलग स्टोर पर जाकर ज्यादा समय की खपत की आवश्यकता होती है। ऐसे में ऑनलाइन शॉपिंग आपके समय और प्रयास को बचाकर इस समस्या से निपटने का एक आसान तरीका प्रदान करता है।

ऑनलाइन शॉपिंग के फायदे और नुकसान-

इस संसार में हर चीज़ के दो पहलू होते हैं यानी एक सकारात्मक और एक नकारात्मक। कुछ ऐसा ही ऑनलाइन खरीदारी के साथ भी है। कुछ मायनों में, यह लाभकारी है और कुछ अन्य तरह से देखा जाए तो, इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। ऑनलाइन खरीदारी के लाभ यहाँ नीचे सूचीबद्ध कराए गए हैं:

- यह हमें खरीदारी का सुविधाजनक तरीका प्रदान करता है।
- हमें विभिन्न उत्पादों और सेवाओं को केवल एक-एक क्लिक में देखने का विकल्प मुहैया कराते हैं जो तरह-तरह के वेरिएंट, आवश्यक आकार और प्रकार, आदि में उपलब्ध होते हैं।
- यह हमें बाज़ार और दुकानों की भीड़ से बचाता है। दूसरे शब्दों में, एक दुकान से दूसरी दुकान पर घूमने में हमारा जो समय बर्बाद होता है और बिलिंग आदि करने के लिए घंटों कतार में खड़ा रहना पड़ता है उससे आज़ादी मिलती है।
- हम अपने मूल्य सीमा में रहकर और उससे भी कम कीमत पर उत्पादों को प्राप्त कर सकते हैं।
- हम अपनी पसंद व अवसर तथा आवश्यकता के अनुसार कपड़े ऑर्डर कर सकते हैं। ज़्यादातर, हम उन पोशाक को नहीं प्राप्त कर पाते हैं, जिसे हम ऑफ़लाइन खरीदारी में चाहते हैं।

ऑनलाइन खरीदारी से होने वाले नुकसान को यहाँ सूचीबद्ध किया गया है-

- ऑनलाइन माध्यम से जो उत्पाद हम खरीदते हैं, आमतौर पर जब हमें मिलते हैं तो वे हमारे द्वारा ऑर्डर किए गए उत्पाद से मेल नहीं खाते।
- यदि हमें तुरंत किसी उत्पाद की आवश्यकता होती है, तो ऑनलाइन खरीदारी विकल्प हमारे लिए ठीक नहीं होता या इसके लिए हमें अतिरिक्त शुल्क का भुगतान भी करना पड़ता है।
- ऑफ़लाइन खरीदारी में हम उत्पाद को तुरंत खरीदकर उसका इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन जब हम ऑनलाइन खरीदारी का विकल्प चुनते हैं तो यह लाभ हमें नहीं मिलता है।
- ऑनलाइन खरीदारी में लेन-देन के उद्देश्य के लिए कई बार हमें अपने कार्ड की जानकारी देनी पड़ती है; हैकर, साइबर अपराध के लिए कार्ड की उन सभी जानकारी का इस्तेमाल कर लेते हैं।
- कभी-कभी उत्पाद की वापसी चार्ज़ेबल हो सकती है और उसमें समय भी लग सकता है।कई बार, टूटा-फूटा या ख़राब सामान प्राप्त होता है।

(vi) **(a)** मोती! क्या नाम रखा था माँ-बाप ने ! हमारे घर मोती आ गया ! हाँ मैं मोती ही तो हूँ, नाम का हीरा। सरकारी कागज़ों में मेरा नाम है मोतीसिंह पुत्र श्री भले राम। कितना कर्ज़ है बापू भले राम तेरे इस मोती सिंह पर? जानता है? मेरी तीन पीढ़ियाँ भी नहीं उतार पाएँगी। तू तो चला गया, और तेरा ये मोती कर्ज़ की चक्की में पिस रहा है।

मोती की अचानक बेहोशी टूटती है। उसकी पत्नी दौड़ कर आती है।

"क्या हुआ?" पत्नी ने पूछा।

"कुछ नहीं," मोती आँसू पोंछता हुआ बोला, "थोड़ा पानी लाना, धैर्या।"

क्या हुआ, बताओगे भी? देखा है क्या हालत हो गई आपकी। चालीस के भी नहीं हुए। बुढ़ऊ लगने लगे हो, " पत्नी धैर्या गुस्से और प्यार की मिश्रित भाषा में बोली।"

"बापू की याद आ रही थी।"

मोती की आँखे फिर भर आईं। कर्ज़ की गुलामी सबसे बड़ी ! दरअसल उसको अपने साथी राजपाल की याद आ रही थी, जिसने पिछले सप्ताह ही आत्महत्या कर ली थी।

पानी पीकर मोती की झपकी लग गई और उसका अवचेतन मन राजपाल की यादों में खो गया।

राजपाल के घर बैंक के कर्मचारी पुलिस ले कर आए थे। आते ही हथकड़ी पहना दी थी। उसकी पत्नी बीच में आई, तो एक पुलिस वाले ने लात मार कर उसे गिरा दिया। ये देख, राजपाल की माँ सदमे में चल बसी। समाज में किसी को भी अपमानित करने का अधिकार पुलिस को ही तो मिला है! आदमी और पुलिस वाले में यही तो अंतर है। पुलिस वाले इंसान होते तो इंसान का सम्मान भी करना जानते। इंसान की भावना भी समझते। वर्दी पहनते ही आदमी की प्रजाति से बाहर हो जाते हैं। और फिर एक स्त्री को सबके सामने लात मारने में उन्हें कैसी लज्जा?

अब जब सारा पैसा जमानत में लग गया तो राजपाल कर्ज़ कैसे उतारता? छह महीने हुए नहीं कि राजपाल के घर फिर बैंक का नोटिस आ गया, जिसमें लिखा था, "अगर अब ब्याज चुकता नहीं किया तो 15 दिन में कानूनी कार्यवाही होगी।" राजपाल को जैसे साँप सूँघ गया था! वह अपने झोले में कुछ लेकर खेत की और निकल पड़ा। दो घंटे बाद खबर आई कि राजपाल ने आत्महत्या कर ली। उसने उसी कीटनाशक को पीकर आत्म-हत्या कर ली जिसे खरीदने के लिए उसने लोन लिया था।

बड़ी घबराहट के बाद, मोती अवचेतन माइंड से बाहर आया। उसकी पत्नी उदास मन से उसको एक-टक देख रही थी।

"देखो जी, अब मन छोटा न करो।", धैर्या बोली। अचानक वो देखती है कि मोती एक-टक उस कनस्तर को देख रहा है जिसमें कीटनाशक रखा है, जिसे उसने फसलों को बचाने के लिए बैंक से कर्ज़ लेकर खरीदा था।

संघर्षों के थपेड़ों से मुरझाए-से धैर्या के मुख-मंडल पर जैसे मौत रेंग गई ! वह चिल्लाते हुए दौड़ी... उसके पीछे उसकी दोनो बच्चियाँ। धीरे-धीरे गाँव इकठ्ठा हो गया था। सब इसी आशंका से ग्रस्त थे कि कहीं मोती ने आत्महत्या तो नहीं करली।

कुछ घंटे बाद पता चला कि मोती बैंक में बैठा पैसे गिन रहा है। उसकी पत्नी और बच्चे वहाँ पहुँचे तो मोती उनसे लिपट गया, और बोला "अब हमारे दु:खों का अंत हो गया है। मैंने खेती से छुटकारा पा लिया है। मैंने सारी ज़मीन बैंक के नाम करा कर कर्ज़ और कर्ज़ का ब्याज उतार दिया है। अब हम शहर जाकर और मज़दूरी कर पेट भरेंगे। कम-से-कम वहाँ कर्ज़ से तो मुक्त रहेंगे।"

वह अपने परिवार के साथ बैंक से बाहर निकलता है तो सामने से आते अपने गाँव वालों को वहाँ पाता है, जो किसी अनहोनी की आशंका से उसे ढूँढते फिर रहे थे। अब मोती के चेहरे पर ज़िंदगी खिल रही थी। गाँव वाले हतप्रभ थे, "कर्ज़ में डूबा आदमी इतना खुश !"

"मैं आज बहुत खुश हूँ," मोती अपने परिवार की ओर देख कर हँसता हुआ शेर की तरह दहाड़ता हुआ बोला, "यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा, दुनिया में आज कौन व्यक्ति सबसे सुखी है ?" युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, जो कर्ज़दार न हो। तो जानते हो गाँव वालो ! आज मैं दुनिया का सबसे सुखी आदमी हूँ। हाँ, मैं कर्ज़-मुक्त हो गया हूँ।

(b) एक बार दिल्ली से मुझे अपने मित्र की बहन की शादी में उपस्थित होने का निमंत्रण मिला। मैं प्राय: दिल्ली बस से जाना पसंद करता हूँ। इस बार मैंने सोचा कि मैं दिल्ली की यात्रा रेल से करूँगा। आरक्षण के लिए प्रयास किया लेकिन प्रयास निष्फल रहा। अत: अब साधारण डिब्बों में ही यात्रा करने का इरादा कर लिया। सभी तैयारी कर स्टेशन पर पहुँचा और टिकट लेने में हुई परेशानी को झेलता हुआ मैं गाड़ी की ओर बढ़ा। कई डिब्बों में झाँका लेकिन कोई खाली सीट नजर न आई। अंत में एक भाई साहब के साथ मैं अन्तिम डिब्बे में सवार हो ही गया। गाड़ी ठीक समय पर चल दी। धीरे-धीरे तेज रफ़्तार पकड़ती हुई गाड़ी भागने लगी। अनेक छोटे-छोटे स्टेशनों को छोड़ती हुई गाड़ी पूरी गति से भाग रही थी। गाड़ी में बैठे कुछ लोग ऊँघ रहे थे, कुछ सो रहे थे, कुछ बातों में लगे थे तथा कुछ ताश खेल कर दुर्भाग्य की चाल से अपरिचित होकर मनोरंजन कर रहे थे। अचानक राजपुरा स्टेशन के पास भयानक टकराहट का शोर हुआ।

लाइनमैन ने गलती से गाड़ी को एक ऐसी लाइन पर ले लिया जिस पर पहले से ही मालगाड़ी दूसरी दिशा से आकर खड़ी थी। ड्राइवर ने आश्चर्य से थोड़ी दूर पर खड़ी मालगाड़ी को देखा। उसी लाइन पर हमारी गाड़ी भी अपने तेज़ वेग से चल रही थी। किसी भी तरह अचानक ब्रेक लगाना सम्भव न था। ड्राइवर ने गाड़ी की चाल कम कर दी। परन्तु दुर्घटना को टाला नहीं जा सकता था। दोनों गाड़ियों के इंजन एक-दूसरे से धड़ाम से टकराए। परिणाम यह हुआ कि बहुत भयंकर शोर होने के पश्चात आधे-से अधिक डिब्बे लाइन से नीचे उतर कर कुछ दूरी पर जा गिरे।

दोनों गाड़ियाँ इतनी भीषणता से टकराईं कि गाड़ी के अगले पाँच डिब्बे तो क्षतिग्रस्त हो गए। उनमें बैठे यात्रियों में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो चोटग्रस्त न हुआ हो। हमारा डिब्बा और पीछे के दस डिब्बे लगभग सुरक्षित थे। यद्यपि कुछ डिब्बे पटरी से उतरे थे पर लोगों को चोट नहीं आई। आगे के जो डिब्बे पटरी से उतर गए थे उन पर बैठे यात्रियों को बहुत चोट आई थी। हमारे डिब्बे में सभी यात्री सुरक्षित थे। पर इस भयानक हादसे से सभी बिल्कुल खामोश, डरे हुए थे। बच्चे और स्त्रियाँ बहुत ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे। मैं भयभीत खड़ा था। उन डिब्बों के आधे-से अधिक यात्री तो मृत्यु के शिकार हो गए थे और कुछ ऐसी स्थिति में थे कि जीवन-मौत के संघर्ष में अन्तिम सांसें गिन रहे थे। चारों ओर कुछ दूरी पर लाशों के ढेर पड़े थे। किसी का शव पहचाना नहीं जा सकता था। इतनी बड़ी गाड़ी में हजारों व्यक्ति यात्रा कर रहे थे। उनमें से कितने मरे तथा कितने मृत्यु शैय्या पर थे, कितने घातक चोट खाकर मूर्च्छित पड़े थे, उनकी गणना असम्भव-सी हो गई थी। अपने डिब्बे में भौचक्का होकर मैं कुछ समय तक तो जड़ बना रहा लेकिन धीरे-धीरे भागते लोगों को देख कर मैं भी भागा। मैंने यथाशक्ति इधर-उधर दबे लोगों को बचाने का और निकालने का प्रयास किया। चार छोटे-छोटे बच्चों, जो अलग-अलग डिब्बों में थे और बेहोश, घायल पड़े थे, को बचाने में, मैं सफ़ल हुआ। मेरे वस्त्र खून से लथपथ हो गए थे। इसके बाद अनेक शवों को उठाने में, घायलों को यथाशक्ति सहायता देने में और उनकी देखभाल के लिए दौड़ता-भागता रहा। इधर-उधर बिखरा सामान एक जगह पर एकत्रित करता रहा ताकि उसे पहचान कर फिर लोग अपना-अपना सामान प्राप्त कर सकें।

दुर्घटना होने के तत्काल बाद स्थानीय डाक्टरों का दल आ गया। सभी कर्मचारी भाग-दौड़ करने लगे। मृतकों के शवों को अलग किया गया। जिनमें अभी साँस चल रही थी, उनके लिए तात्कालिक उपचार का प्रबन्ध करके एम्बुलेंस गाड़ियों में उन्हें अस्पताल भेजा गया। अस्पताल में एक स्थान पर शव जाँच के लिए रख दिए गए। सबके सामान की रखवाली। पुलिस कर रही थी। जिन्हें हल्की चोट लगी थी, वे लोग अपने-अपने स्थान पर चले गए। सभी की प्रारम्भिक चिकित्सा का वहाँ प्रबन्ध किया गया था।

मनुष्य जीवन वस्तुत: सुख-दु:ख की आँख-मिचौली है। इस विश्व में सदैव एक सी स्थिति में कभी कोई प्राणी नहीं रहता है। प्रकृति स्वयं बदलती है। लेकिन सुखों के क्षण और दुखों की भयावह घटनाएँ मानस पटल पर अंकित हो जाती हैं। इस घटना को याद कर मेरे शरीर में आज भी सिहरन हो जाती है। ईश्वर मानव को ऐसी दुर्घटनाओं से बचाए। दुर्घटना स्थल पर तड़पते इंसानों का दृश्य देखकर मैं भयावह हो गया .... और मैं चाह कर भी उस कारुणिक दृश्य को भुला नहीं पाया।

Answer 2.

(i) कैसोवेरी चिड़िया अन्य चिड़ियों की भाँति उड़ न सकने कारण अन्य चिड़ियों से अलग थी। बाकी चिड़ियों के बच्चों का व्यवहार उसके साथ अच्छा नहीं था। वे हमेशा उसे चिढ़ाते रहते थे। कोई उसे कहता, "जब तुम उड़ नहीं सकती तो चिड़िया किस काम की।" कोई पेड़ की डाल पर बैठकर उसे चिढ़ाता और कहता, "अरे ! कभी हमारे पास भी आ जाया करो, जब देखो जानवरों की तरह नीचे चरती रहती हो।" इस प्रकार वे उसका उपहास उड़ाते रहते थे।

(ii) कैसोवेरी को बाकी चिड़ियों के बच्चों से शिकायत थी क्योंकि वे हमेशा उसे चिढ़ाते और उसका उपहास उड़ाते रहते थे। उसकी यह शिकायत जामुन के पेड़ से दूर हुई।

(iii) हमें जो प्राप्त है उसे पर्याप्त मानकर और किसी से अपनी तुलना न कर,खुद में लघुता का अनुभव न करके; हम अपनी ज़िंदगी को बेहतर बना सकते हैं।

(iv) **a. (1)** नम्रता और प्रेम

b. (3) उसके जंगल में बीज़ बिखेरने से

c. (2) उसे अपनी पहचान मिली

(v) **a. (1)** भाव- विभोर होना

b. (4) आत्मविश्वास का भाव

c. (1) अस्तित्त्व के सन्दर्भ में

Answer 3.

(A) **(i)** मैं सायंकाल आया था।

(ii) ज़मीन

(iii) – b सच ही तो है खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

(iv) –a प्राकृतिक सौंदर्यता सबका मन मोहती है।

(v) –a कृतज्ञ

(B) **(i)** मोहन ने रामू की ईंट से ईंट बजा दी।

(ii) घाट-घाट का पानी पीना

(iii) **–b** घुटने टेकना

(iv) **–c** चारा न होना

(v) **–a** बहुत लाभ होना

SECTION B

LITERATURE–40 Marks

Answer 4.

(i) पाठ का नाम- गौरी तथा लेखिका का नाम सुभद्रा कुमारी चौहान है।

(ii) यह कथन गौरी ने कहा। वह कानपुर सीताराम जी के बच्चों की देखभाल के लिए जाना चाहती थी क्योंकि सीताराम जी को सत्याग्रह आन्दोलन के दौरान गिरफ़्तार करके एक साल के लिए जेल में डाल दिया गया था।

(iii) इस कथन के पीछे वक्ता का उद्देश्य अपने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले देशभक्त सीताराम जी के बच्चों की देखभाल करके स्वयं भी देश सेवा करना था। बच्चों की परवरिश के लिए उसके द्वारा उठाया गया कदम सर्वथा उचित था।

(iv) गौरी एक चरित्र प्रधान भावनात्मक कहानी है। गौरी एक सशक्त नारी पात्र है। गौरी बाबू राधाकृष्णन, की इकलौती उन्नीस वर्षीय सुन्दर कन्या थी, विवाह योग्य होने पर माता-पिता को उसके विवाह की चिंता हुई। दृढ़ निश्चयी व निर्भीक गौरी लज्जा और संकोच के कारण अपने माता-पिता से यह नहीं कह पाई कि वे उसका विवाह किसी से भी करवा दे। वह हर हाल में सुखी रहेगी।विदुर सीताराम स्वभाव से नेक, ईमानदार व देश प्रेमी होने पर भी राधाकृष्णन नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी उनके दो बच्चों की धाय माँ बने। गौरी सीताराम की देशभक्ति व सादगी के विषय में जानकर मन ही मन उन्हें अपना पति मान लेती है। गौरी का देशभक्ति से प्रभावित होना उसके अन्तर्मन में छिपे देशप्रेम की भावनाओं को दर्शाता है। सीताराम जी के जेल जाने पर वह नौकर के साथ कानपुर जाकर बच्चों की देख-भाल करती है। हर महीने बच्चों के कुशल-क्षेम के समाचार भी जेल भिजवाती है। गौरी त्याग की मूर्ति है। धनी तहसीलदार साहब का रिश्ता ठुकराकर सीताराम और उसके दोनों बच्चों की माँ बनती है। इस तरह वह अपनी देशभक्ति व त्याग की भावना का परिचय देकर यह साबित करती है कि उसका त्याग भी किसी देशभक्त के त्याग से कम नहीं था।

Answer 5.

लेखिका शिवानी द्वारा लिखित 'सती' एक व्यंग्यात्मक कहानी है। इस कहानी में कुल चार पात्र हैं जिनमें मदालसा प्रमुख है। छूटती हुई गाड़ी में हाँफ़ती हुई, सामान के साथ चढ़ने वाली चौथी महिला यात्री का नाम मदालसा सिंघाड़िया था। जिसका डिब्बे में प्रवेश मात्र बाकी महिला सहयात्रियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए काफ़ी था। अपने भारी-भरकम प्रभावशाली व्यक्तित्व, छह फुट साढ़े दस इंच लम्बे कद का एहसास उसने स्वयं घुसते ही "केम बेन, बहुत लम्बी हूँ न मैं" कहकर करा दिया था। वह एक गठे-कसे शरीर वाली लावण्यमई गतयौवना थी।

उसकी भाषा से स्पष्ट हो गया कि वह एक गुजराती महिला थी। वाचाल मदालसा ने डिब्बे में घुसते ही अन्य महिलाओं का परिचय लेना प्रारम्भ कर दिया।वह संवाद बोलने में अत्यंत निपुण थी जो न सिर्फ़ हिंदी बल्कि अंग्रेज़ी भी त्रुटि रहित बोलती थी। जब महाराष्ट्रियन महिला ने हिन्दी न जानने का बहाना बनाया तो उसने त्रुटिहीन अंग्रेज़ी में धाराप्रवाह भाषण झाड़कर अपने शिक्षित आधुनिक होने का परिचय दिया।

वह इतनी व्यवहार कुशल थी कि अपनी बोली तथा व्यवहार से सबके साथ ज़ल्दी ही निकटता बना लेती है और सबको प्रभावित भी कर लेती है। मदालसा ने अपनी वाकचातुरी से एवं बातों के सम्मोहन जाल में फँसाकर अपनत्व का ऐसा पासा फेंका कि उसके साथ घटित घटनाओं को सारी सहयात्री महिलाओं ने सच मान कर उस पर विश्वास कर लिया।

नारी हृदय कितना कोमल व सहिष्णु होता है कि उसे परिवर्तित होने में देर नहीं लगती। परन्तु मदालसा में उसका विरोधाभास देखने को मिलता है। वह वाकपटु नारी अपनी सहयात्री महिलाओं को अपने कपट-जाल में फँसाने के लिए भूमिका बाँधती है।वह उन्हें बताती है कि कल ही प्रिटोरिया से अपने पति का शव लेने आई है जो पिछले वर्ष एक पर्वतारोही दल के साथ भारत आए थे, वही एक एवलैंस (तूफ़ान) के नीचे दबकर मारे गए। मदालसा ने अपने पति के साथ सती होने का अपना दृढ़ निश्चय सुनाकर सबकी सहानुभूति अर्जित कर ली।

मदालसा में वैधव्य का कोई चिह्न नहीं था बल्कि सैलून के कटे-सँवरे बालों के साथ-साथ उसके व्यवहार में भी एक अल्हड़पन था, जिसकी झलक तब दिखाई देती है जब वह

अपनी धानी रेशमी साड़ी को हाफ पैंट की तरह ऊपर चढ़ाकर पालथी मार कर बैठ गई। मदालसा एक अच्छी अभिनेत्री व नारी मनोविज्ञान से अवगत थी। वह अपनी सहयात्री महिलाओं की सहानुभूति प्राप्त कर अपने उद्देश्य में सफल हो जाती है और महिला सहयात्रियों को अपना भोजन खिला देती है और उसके बाद अपने पानदान से सबको पान खिलाती है, जिसमें कुछ नशीला पदार्थ मिला हुआ था। नशे के कारण वे सभी गहरी नींद में सो जाती हैं। मदालसा उनका सारा माल लेकर अगले स्टेशन पर उतर जाती है।

वह मिसेज वनोलकर का स्टील का बक्स ले गई जिसमें उनके विवाह का जड़ाऊ सेट था। समाजसेविका यानि पंजाबी महिला का सूटकेस ले गई, जिसमें उन्होंने आश्रम के लिए दस हज़ार रुपए रखे थे। लेखिका के पास सिर्फ़ एक बटुआ था जिसमें पचपन रुपए और फर्स्ट क्लास का वापसी का टिकट था। इसलिए उन्हें बहुत सामान्य घृताहुति उस सती की चिता में देनी पड़ी।

मदालसा एक ऐसी स्त्री है जिसने छल-फरेब का सहारा लेकर समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व किया है जो मानव के सद्गुणों का फ़ायदा उठाकर उनके साथ विश्वासघात करता है।वह एक धूर्त एवं निकृष्ट नारी के रूप में हमारे सामने आती है जो अपनी आपराधिक प्रकृति से मानवता को शर्मसार करती है।

Answer 6.

'भक्तिन' शीर्षक रेखाचित्र महादेवी वर्मा का एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जिसमें उन्होंने एक दीन दलित महिला के बालपन से लेकर प्रौढ़ा तक के जीवन के संघर्षपूर्ण दु:खांत को प्रस्तुत किया है। भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन था परंतु उसे इस नाम से जुड़े अतीत के संदर्भो, संघर्षो तथा अपमानों से इतनी व्यथा झेलनी पड़ी कि उसे इस नाम से ही घृणा हो गई। वह लेखिका द्वारा दिए गए भक्तिन नाम को पाकर संतुष्ट हो जाती है। भले ही इस नाम में कोई कवित्व नहीं था। भक्तिन का अतीत वेदना का भंडार रहा है। वह एक गोपाल कन्या थी। उसके पिता अँसी के गाँव के प्रसिद्ध सूरमा थे और वह उनकी इकलौती कन्या थी। इस स्त्री-धन पर पहला प्रहार उसके बाल-विवाह के रूप में सामने आता है। केवल पाँच वर्ष की इस अबोध कन्या का विवाह कर दिया जाता है और उसकी विमाता ने केवल नौ वर्ष की आयु में उसका गौना कर दिया। अत: विमाता के इस निर्णय के रूप में उस पर कष्टों का एक और बाण छोड़ा गया।

भक्तिन ससुराल गई। पिता को प्राणघातक रोग लगा। उसकी मृत्यु तक का समाचार भक्तिन को नहीं दिया जाता- न विमाता की ओर से और न सास की ओर से। सास ने इतनी दया दिखा दी कि उसे मायके जाकर घूम आने का आदेश दे डाला।

लड़के-लड़की में भेद करना हमारे समाज का मध्यकाल से चला आ रहा एक अपमानमूलक व कलंकपूर्ण नियम रहा है। अत: भक्तिन को तीन-तीन कन्याओं को जन्म देने पर घोर उपेक्षा, अपमान और कुपोषण का शिकार होना पड़ता है। पति का देहांत हुआ तो जेठ-जेठानियों के मुँह में पानी आने लगा कि उसकी संपत्ति किस प्रकार हाथ में आए।

भक्तिन पर दुर्भाग्य का आतंक निरंतर बना रहा। समय का प्रहार उसकी बड़ी पुत्री विधवा हो गई। यहीं पर बस नहीं हुई। विधवा बहन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया। एक दिन माँ की अनुपस्थिति में वर महाशय ने बेटी की कोठरी में घुसकर द्वार बंद कर लिया। उसके साथी गाँव वालों को बुलाने चले गए। बेटी ने उस डकैत वर की खूब पिटाई करके जब द्वार खोला तो वहाँ उपस्थित पंचों ने फैसला सुनाया कि वास्तविकता कुछ भी हो, अब उन दोनों को पति-पत्नी के रूप में रहना पड़ेगा।

गले पड़ा दामाद निठल्ला था। दिन-भर तीतर लड़ाता रहता था। लगान चुकाना भारी हो गया। जमींदार ने भक्तिन को बुलाकर दिनभर धूप में खड़े रखा। इस अपमान से आहत होकर वह कमाई के विचार से शहर आकर लेखिका की सेविका बन जाती है। महादेवी वर्मा ने इस कटु यथार्थ को अनुभूति की तरलता और गहन संवेदना द्वारा चित्रित किया है कि भारतीय नारी सदा-सदा से दु:खों के पहाड़ के नीचे दबती रही है। आज भले ही परिस्थितियाँ बदल रही हों परंतु पुरुषप्रधान समाज में नारी सदैव पिसती तथा पिटती रही है।

Answer 7.

(i) प्रस्तुत पंक्तियाँ 'एक फूल की चाह' कविता से ली गई हैं। यहाँ 'मैं' शब्द का प्रयोग सुखिया के पिता के लिए किया गया है।

(ii) बेटी ने अपने पिता से यह इच्छा जाहिर की थी कि वह उसके लिए देवी के चरणों में अर्पित फूल लाएँ।

(iii) अछूत होने के कारण वक्ता (सुखिया) की इच्छा पूरी नहीं हो सकी क्योंकि जब वक्ता (सुखिया) के पिता मंदिर से अपनी बेटी की आखिरी इच्छा पूरी करने के लिए देवी के चरणों में अर्पित फूल लेकर आ रहे थे तो आस-पास के लोगों ने पहचान लिया कि वह अछूत है। उस बेचारे को सब लोगों ने मिलकर मारा और एक सप्ताह के लिए जेल भिजवा दिया।

(iv) 'एक फूल की चाह' कविता सियारामशरण गुप्त जी द्वारा रचित तत्कालीन समाज में छुआछूत की भावना को बड़े ही मार्मिक ढंग से दर्शाती है। कविता में कवि ने समाज में व्याप्त छुआछूत की पीड़ा को एक कथा के माध्यम से समझाया है। पूरे गाँव में महामारी फैली हुई थी। एक पिता अपनी बेटी सुखिया को घर से बाहर खेलने जाने से रोकता है, लेकिन बेटी नहीं मानती और बुखार से पीड़ित हो जाती है। उसके मन में विचार आता है कि शायद ईश्वर की कृपा से बेटी ठीक हो जाए। बेटी ने देवी के मंदिर के प्रसाद के रूप में एक फूल की चाह प्रकट की। बेटी की इच्छा को पूरी करने के लिए पिता पर्वत स्थित मंदिर गया। मंदिर में उसने दीप और फूल माला माँ को भेंट चढ़ाई। उसे पुजारी द्वारा फूल भी प्राप्त हुए लेकिन मुख्य द्वार पर लोगों द्वारा उसे पकड़ लिया जाता है। अछूत होने के कारण लोग उसे गालियाँ देते और मारते

हैं। इस मारपीट के कारण वह फूल हाथों से गिर गया जिसे वह अपनी बेटी को देने जा रहा हैं। वह लहूलुहान हो जाता हैं। जब वह किसी प्रकार अपनी बेटी के पास पहुँचता है, तब तक बेटी अपने प्राण त्याग चुकी होती है। इस प्रकार एक अछूत पिता अपनी बेटी की अंतिम इच्छा को पूरी नहीं कर पाया। बेटी को देखकर पिता पछताने लगता हैं। वह सोचता है कि वह व्यर्थ ही मंदिर गया था। वह न तो अपनी बेटी से मिल सका और न ही उसकी अंतिम इच्छा पूरी कर सका।

इस प्रकार एक अछूत पिता की बीमार बेटी की एक फूल की चाह की इच्छा पूरी न हो सकी। यह कविता हमें समाज में व्याप्त ऊँच-नीच, छुआछूत जैसी बुराइयों को नष्ट करने की प्रेरणा देती है। इन बुराइयों के कारण ही हमारे देश ने अपने अतीत में अनेकानेक समस्याओं का सामना किया तथा इतनी वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद आज भी हम इस समस्या से कहीं न कहीं जूझ रहे हैं; जिस कारण हमारे देश की प्रगति आज भी बाधित है।

Answer 8.

सूरदास भक्तिकालीन कृष्ण-काव्य धारा के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने अपनी काव्य में कृष्ण बाल-लीलाओं का अद्‌भुत वर्णन किया है। इस वर्णन में स्वाभाविकता एवं वात्सल्य रस का सुन्दर योग है। सूरदास जी बालरूप कृष्ण के जिस रूप का वर्णन कर रहे हैं, उसमें उनके हाथ में मक्खन है। उनके मक्खन में सने हाथ बेहद खूबसूरत लग रहे हैं। वे अस्वस्थता के बल चल रहे हैं जिसके कारण उनका शरीर गंदा हो गया है। कृष्ण को मक्खन और दही बहुत भाता है। मूलत: उनके मुख पर दही लगा हुआ है।

कृष्ण के स्वरूप की प्रकृति का वर्णन करते हुए कवि ने उनके सुंदर गालों और खुली आँखों की चर्चा की है। उनके माथे पर गोरोचन का तिलक लगा हुआ है। बालों की लताएँ लटकती रहती हैं, जो मुँह पर लटकती रहती हैं। ऐसा लगता है मानो मस्त भौरे गाल रूपी फूलों का ही रस पी रहे हो। उनके गले में कैथुला और शेर का नखरा बेहद शोभायमान हो रहा है। सूरदास जी कहते हैं कि श्री कृष्ण के बाल रूप का एक पल के लिए दर्शन करके सुख प्राप्त करना, सैकड़ों युगों का सुख और भी श्रेष्ठ और मनमोहक है।

जब कृष्ण बड़े हो जाते हैं तो वे बोलना सीख जाते हैं। यशोदा को वे मैया, नंद को बाबा और बलराम को भैया कहने लगे हैं। वे चलते रहते हैं क्योंकि माता उन्हें दूर तक जाने से रोकती है। उन्हें डर है कि कोई उनके बच्चे को नुकसान न पहुँचा दे। ब्रज की गोपियाँ और गोपालों के बच्चों का आश्चर्य और उत्सुकता से वात्सल्य रस का यह दृश्य हैं। हर घर में इस बात की बधाइयाँ दी जा रही हैं। सूरदास भी कृष्ण के इस बालरूप पर न्योछावर हो रहे हैं।

बलराम का कहना है कि कृष्ण यशोदा और नंद बाबा का पुत्र नहीं है, वे लोग कहीं से उसे खरीद कर लाए हैं। वह बार-बार कृष्ण के असली माता-पिता का नाम पूछते हैं।

बलराम तर्की पूछ रहा है कि नंद और यशोदा तो दोनों गोरे रंग के हैं, फिर उनके यहाँ तू साँवला जैसा कैसे हो सकता है? बलराम के इस तर्क पर सभी ग्वालों के बच्चे ताली बजा-बजाकर उपहास उड़ाते हैं और बलराम उन्हें बढ़ावा देते हैं। कृष्ण अब अपनी माँ पर भी संदेह व्यक्त करते हैं क्योंकि वह बलराम को कभी कुछ नहीं कहती हैं उल्टा उसे ही डाँटती रहती है। ये बातें सुनकर यशोदा मैया मन ही मन प्रसन्न हो रही हैं।

इस प्रकार सूरदास ने श्रीकृष्ण के बालरूप और वात्सल्य रस का सुन्दर, मनोहारी और अलौकिक चित्रण किया है। उनका यह चित्र बालमनोविज्ञान के अनुसार चित्रित है जिसे आज तक अनोखा माना जाता है।

Answer 9.

महादेवी वर्मा की कविता 'जाग तुझको दूर जाना' एक जागरण गीत है। उसमे सांसारिक बाधाओं तथा विपदाओं के बीच में भी सांसारिक पथ पर निर्भर होकर विकास पथ पर आगे बढ़ने का सन्देश दिया गया है। यह गीत रहस्यवाद के आवरण से बड़ा होने के कारण विरह की साधना को भी प्रकाशित करता है। वह साधना कष्टों को स्वीकार करती हुई निरंतर साधना में लगे रहने के लिए आग्रह करती और उत्साहित भी करती है। अत: किसी प्रकार का आलस्य और प्रमाद उसके लिए उचित नहीं है। उसे नश्वरता के पथ पर अपने अमिट चिह्न छोड़ने चाहिए कि वह अपनी छाया को वास्तविकता की संज्ञा देकर अपने लिए कारागार का निर्माण न करे। वह जीवात्मा वस्तुत: अमर सपूत है। अत: मृत्यु को अंगीकार करना या हृदय स्थान देना मूर्खता है। जीवात्मा का लक्ष्य दूरगामी और उन्नत है। यह स्वयं सिद्ध है कि उसके मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ आएँगी परन्तु उसे सब पर विजय प्राप्त करके आगे बढ़ते जाना हैं। माया के आकर्षण बंधन भी उसे पथ से विचलित करना चाहेंगे, मृत्यु रूपी चिर निद्रा भी भयभीत करना चाहेगी परन्तु इस जीवात्मा को प्रत्येक हालत में विजयी सिद्ध होना है। कवयित्री का स्पष्ट विचार है कि जीवन मार्ग बाधायुक्त होने के साथ बड़ा लम्बा भी है। इस लम्बे पथिक आलस्य को त्याग लक्ष्य और संकल्प लेकर आगे बढ़ता है। वह कहती है कि अविचल रहने वाला हिमालय पर्वत भले ही कम्पित हो जाए, शाश्वत शांत रहने वाला आकाश भले ही प्रलय वृष्टि करने लगे; अन्धकार की काली छाया भले ही सूर्य निगल जाए, चाहे भयंकर तूफ़ान विद्युत रेखा की तरह चारों ओर फैल जाए परन्तु इस विषम परिस्थितियों में भी निर्भीक, अविचल रहकर अपनी साधना पर चलना है। अविचल आस्था के चरण को दिशाहीन करने के लिए अथवा मन संकल्प विविध आकर्षणों के जाल में पकड़ने के लिए सांसारिक आकर्षण के मधुर मार्ग में आ सकते परन्तु इसे मिथ्या मानकर मानवता के दर्शन करा क्रंदन को दूर करना चाहिए। इसे निरंतर सजग रहना है कि कहीं वह स्वयं सुख की इच्छा को ही बंदी न बना ले। सांसारिक सुख स्वप्न मानव इच्छा को ही बंदी न बना ले। सांसारिक सुख स्वप्न मानव पथ में बाधा उपस्थित करते है। ये सभी

क्षण भंगुर होते हैं। अत: मिथ्या सुखों को जीवन का लक्ष्य न बना कर हमें अपने संकल्प पथ पर निरंतर आगे बढ़ना है। वह अमर पुत्र है। अत: मृत्यु से कभी भयभीत नहीं होना चाहिए। उसे अपने कर्त्तव्य पथ पर इतना आगे बढ़ना है जिसके आगे मार्ग ही न हो। इस प्रकार कवयित्री का विचार है कि मनाव को निराशा, अनास्था, नश्वर भावना आदि को त्यागकर कर्त्तव्य पथ पर, साधना पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। ऐसा करने से दूर की मंज़िल भी निकट सिद्ध हो जाती है।

Answer 10.

(i) वक्ता समर है। वह एक मध्यमवर्गीय परिवार से है।

(ii) दिवाकर वक्ता (समर) का मित्र है जो फक्कड़, मस्तमौला और विनोदी स्वाभाव का पात्र है। वह वक्ता (समर) को प्रूफ रीडिंग का काम दिलवा रहा था।

(iii) प्रूफ रीडिंग की नौकरी मिलने की सूचना मात्र से ही समर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि वह अपने घर में बहुत ही परेशान था। उसे अपने घर में दो-दो पैसों के लिए तरसना पड़ता था। इसीलिए नौकरी दिलाने पर वह अपने मित्र दिवाकर के प्रति कृतज्ञ था।

(iv) वक्ता(समर) परिवार की दशा अत्यंत दयनीय है। उसके पिता ठाकुर साहब पच्चीस रुपए महीना पेंशन पाते हैं। समर का बड़ा भाई धीरज 100 रुपए मासिक वेतन पर सर्विस करता है। परिवार के अन्य सदस्यों में माता, भाभी, दो छोटे भाई अमर तथा कुँवर तथा छोटी बहन मुन्नी है, जो पति द्वारा निकाल दी जाने के कारण मायके में रहती है। दोनों छोटे भाई छोटी कक्षाओं में पढ़ते हैं।समर 19-20 वर्ष का युवा छात्र है। उसका जन्म और लालन-पालन निम्नमध्यवर्गीय परिवार में हुआ है जिसमें नौ सदस्यों का संयुक्त भरण-पोषण बाबूजी के 25 रुपए की पेंशन तथा बड़े भाई धीरज के 100 रुपए के वेतन से किसी प्रकार चलता है।

Answer 11.

समर 'सारा आकाश' उपन्यास का नायक है और प्रभा का पति है। उसका अभी विद्यार्थी जीवन चल रहा है। उसकी इच्छा के खिलाफ शादी कर दी गई है, इसलिए अपनी नव-विवाहिता पत्नी से सामीप्य नहीं बना पाता। समर की चरित्रगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(1) पढ़ने वाला: प्रारम्भ में वह एक पढ़ने वाले विद्यार्थी के रूप में सामने आता है। उसकी लगन पढ़ने में है इसीलिए वह नहीं चाहता था कि उसका विवाह कर दिया जाए। उसकी इच्छा के प्रतिकूल विवाह होने से उसकी पढ़ाई में बाधा पड़ती है। घर में रोज़ किसी-न-किसी बात पर चिक-चिक होती रहती है इसलिए वह अक्सर अपने मित्र दिवाकर के घर पर पढ़ने के लिए चला जाता है। पढ़ने में व्यवधान न पड़े इसलिए वह अपनी पत्नी से भी बोलचाल नहीं करता। वह इण्टर में पढ़ रहा है और कॉलेज जाता है। वार्षिक परीक्षा में वह द्वितीय श्रेणी में पास हुआ। इससे प्रकट होता है कि वह पढ़ने में होशियार है।

(2) शुरू में निराशावादी: विवाह के बाद जो उत्साह और उमंग युवकों में होता है, उसका समर में अभाव है। वह अपने साथियों से बातचीत करने में कतराता, परिचित-अपरिचितों से आँख चुराता है कि वे उससे सुहागरात के सम्बन्ध में मज़ाक करेंगे। वह प्रारम्भ को बोझीला मानता है और कहता है कि उसमें भागने का साहस नहीं है।

(3) शान्त स्वभाव वाला: वह घर में शान्ति चाहता है, लेकिन वह उसे घर में नहीं मिल पाती। घर में रोज़ाना किसी-न-किसी बात पर चिक-चिक होती रहती इसलिए वह पढ़ नहीं पाता। अक्सर पढ़ने के लिए वह दिवाकर के घर पर चला जाता है। अम्माजी और बाबूजी को तो रोज़ ही प्रभा के काम-काज के बारे में जली-कटी सुनानी होतीं और इस माहौल में वह अशान्त हो जाता ! पढ़ाई के लिए शान्त वातावरण आवश्यक है जो समर को नहीं मिल पाता। वह सुहागरात वाले दिन से ही प्रभा से बोला नहीं था।

(4) सच्चा मित्र: वह दिवाकर का सच्चा मित्र है। उन दोनों में प्रगाढ़ता है। समर उसके घर में पढ़ने चला जाता है और कभी-कभी वहाँ खाना भी खा लेता है। वह उसका आदर करता है। जब कभी रुपयों की आवश्यकता होती है तो दिवाकर उसे उधार रुपए भी दे देता है। दिवाकर ने उसकी नौकरी की व्यवस्था भी की।

(5) पुराने विचारों और पहनावे वाला: समर पुराने विचारों वाला व्यक्ति है और साधारण कपड़े पहनने वाला है। उसे चटक-मटक और फैशन वाले कपड़े पसन्द नहीं हैं और न ही वह इतना खर्च कर सकता है। दिवाकर ने एक दिन उससे कहा, ''देशी और विदेशी की बात नहीं जानता, लेकिन देशीपने का नाम लेकर कार्टून जैसी सूरत बनाए रखना भी मुझे पसन्द नहीं है।

(6) शुरू में पत्नी के खिलाफ़ बाद में प्यार करने वाला: प्रारम्भ में तो समर अपनी नवविवाहिता पत्नी के खिलाफ़ ही रहा क्योंकि उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ घरवालों ने उसकी शादी कर दी थी। इसलिए वह बहुत दिनों तक उससे बोला भी नहीं। हमेशा उससे गुस्सा ही रहा। कभी उसने यह जानने की कोशिश भी नहीं की कि वह कैसे रह रही है, लेकिन उत्तरार्द्ध में वह उससे बोलने भी लगा और प्यार भी करने लगा।

(7) शिरीष भाई की बातों पर विश्वास करने वाला: पहले तो शिरीष भाई की बातें समर की समझ में ही नहीं आईं, पर धीरे-धीरे वह उन पर विश्वास करने लगा। उसने हिन्दू समाज के ढाँचे के बारे में बताया कि शादी-विवाह एक पवित्र बन्धन है। शिरीष भाई ने बताया कि ऋषि-मुनियों के बनाए सारे धर्म-नियम संग्रहालय में रखने लायक हैं, किसी काम में आने लायक नहीं हैं। धर्म के नाम पर पैसा कमाना, लोगों को धोखा देना ठीक नहीं है, उनके विचार से सच्चा हिन्दू सोचता या जाँचता कुछ नहीं, वह तो चाहे आध्यात्मिक ज्ञान हो या रिश्वत और ब्लैक का रुपया, सबको ग्रहण करना जानता है। धीरे-धीरे समर भी उनकी बात मानने लगा था। सब मिलाकर समर का चरित्र मेधावी, निराशावादी, स्वाभिमानी और अपने फैसले पर

अडिग रहने वाला है। वह घर में परेशान रहता है और बाहर जाकर खुश रहता है। उसका सम्पूर्ण जीवन निराशा और कष्टों में बीतता है। अन्त में तो वह आत्महत्या तक करने को तैयार हो जाता है, लेकिन अपनी सूझ-बूझ से आत्महत्या करने से अपने को बचा लेता है।

Answer 12.

सारा आकाश उपन्यास में मध्यवर्गीय युवक समर के जीवन-संघर्ष की ही कथा नहीं है वरन हमारे समाज के मध्यम वर्ग के आर्थिक और सामाजिक जीवन का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया गया है। कथा नायक समर में आदर्श और उच्च भाव है। वह कुछ बनने का स्वप्न देखता है। उसके आदर्श राणा प्रताप और शिवाजी है। इसी बीच उसके पिता उसका विवाह प्रभा नामक शिक्षित युवती से कर देते हैं। समर की महत्वकांक्षा पर कुठाराघात होता है। इससे समर के जीवन की संघर्ष की कथा उपजती है। सारा आकाश उपन्यास में जिन समस्यायों का चित्रण किया गया है, उनका वर्णन निम्न रूपों में किया जा सकता है -

1. **बेरोज़गार युवकों के संघर्ष का वर्णन:** सामान्यतया'' मध्यम वर्ग के माता पिता आत्म निर्भर हुए बिना लड़कों की शादी कर देते हैं। फिर आए दिन तनाव, खींचतान की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। निम्न माध्यम वर्ग के लोग इस हालत पर शादी विवाह करके, परम्पराओं अंध विश्वासों तथा अपरिपक्व मानसिकता का परिचय देते हैं।
2. **संयुक्त परिवार की समस्या:** उपन्यासकार ने मध्यम वर्ग की सामान्य अपरिपक्व मानसिकता का सजीव चित्रण किया है। इस वर्ग की मानसिकता, अंध विश्वास, परंपरागत संस्कार आदि से जुड़ी होती है। यह सामान्यत: अपरिपक्व और किसी हद तक घिनौनी भी हो सकती है, लड़के की इच्छा के विपरीत उसकी शादी कर दी जाती है। लड़के को उसे स्वीकार करना ही पड़ता है। राजेंद्र यादव जी ने इस उपन्यास को मर्मस्पर्शी बनाने के लिए अंध विश्वासों, परम्पराओं तथा संकीर्ण भावनाओं को हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।
3. **स्त्री जाति पर होने वाले अत्याचार:** प्रभा की घर में जो स्थिति है वह मर्मस्पर्शिता का केंद्र है। सामान्यतया सभी पाठक उसके प्रति उदार हैं। समर और प्रभा के बीच बनने वाली दीवार से सभी सदस्य निश्चिंत रहते हैं। भाभी आग में घी डालने का काम करती है। प्रभा की हालत घर में नौकरानी-सी हो जाती है। परन्तु जब प्रभा कुछ प्रगतिशील मार्ग अपनाती है तो परिवार पर बज्रपात होता है। वह थोथी नैतिकता में जीना उचित नहीं समझती है।
4. **भारतीय एवं पश्चिमी सभ्यता में अंतर:** उपन्यासकार ने परिवार की समस्त दुर्बलताओं का यथार्थ चित्रण किया है। शिरीष के संपर्क में आने पर समर संयुक्त परिवार का विरोधी बन जाता है। अंत में वह कहीं भाग जाने या ट्रैन से कट जाने के लिए बाध्य हो जाता है। इस प्रकार जीवन की कटुता, विषमता और आर्थिक अभाव में पिसते हुए समर के जीवन संघर्ष को बड़ा मार्मिक बनाया गया है।
5. **दहेज प्रथा की समस्या:** दहेज प्रथा समाज के लिए एक कोढ़ है। देश की अधिकांश जनता गाँव में रहती है और उस रोग से पीड़ित है। अत: विषय के प्रति पाठकों में रूचि का होना स्वाभाविक है। प्रभा और मुन्नी का जीवन दहेज के कारण ही नष्ट हुआ है। पाठक प्रभा और मुन्नी के प्रति आदि से अंत तक उदार दिखाई पड़ते हैं। उपन्यासकार का विश्वास है कि जब तक विवाह कराने की डोर माँ बाप के हाथ में है, तब तक सारा आकाश की सच्चाई जिन्दा है। लड़के लड़कियों को आपस में एक-दूसरे को समझने के लिए यातनाओं से गुजरना ही है। एडजस्टमेंट की तकलीफ़ें बर्दाश्त करना ही है।

   सारा आकाश उपन्यास अनेकानेक समस्याओं को अपने कलेवर में समाहित किए हुए है। इन समस्याओं के रूप में इसका रूप और अधिक सार्थक बन गया है। उपन्यास की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(I) संयुक्त परिवार की समस्या **(II)** दहेज प्रथा की समस्या

6. **नारी ही नारी की शत्रु:** सारा आकाश उपन्यास के सभी पात्र स्वाभाविक एवं यथार्थ है। भाभी के चरित्र का यदि विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होगा कि प्रत्येक संयुक्त परिवार में इस स्वभाव की स्त्रियाँ उपलब्ध होंगी। भाभी की कुटिलता, ईर्ष्या कान भरने की आदत, नाज़ नखरा कहीं भी अस्वाभाविक नहीं है। दूसरों का दाम्पत्य जीवन इनसे देखा नहीं जाता। प्रभा की शिक्षा तथा सौंदर्य से भाभी जी सुलगती रहती है। परिवार में प्रभा की दयनीय स्थिति बनाने का सम्पूर्ण श्रेय भाभी जी को है।

   इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सारा आकाश उपन्यास यथार्थवादी उपन्यास है। अपने साथ मध्यवर्गीय परिवार की विभिन्न समस्यों को समाहित किए हुए कथावस्तु, पात्र चित्रण, वातावरण तथा उद्देश्य सभी दृष्टियों में अंकित है।

Answer 13.

(i) प्रस्तुत कथन की वक्ता मल्लिका और श्रोता निपेक्ष हैं।

(ii) प्रस्तुत कथन का सन्दर्भ यह है कि मल्लिका कालिदास से नि:स्वार्थ प्रेम करती है। वह कालिदास को महान् बनाने हेतु अपना सर्वस्व बलिदान कर देती है। कालिदास को जब पद, प्रसिद्धि, यश, वैभव आदि प्राप्त हो जाता है तो वह अपने आप को उसके योग्य नहीं मानती है।

(iii) वक्ता (मल्लिका) ने कालिदास को असाधारण कहा है क्योंकि वे अत्यंत असाधारण प्रतिभा के स्वामी हैं। वे बहुत अभावों में जीते हुए भी विलक्षण व्यक्तित्व रखते थे। यही कारण है कि उन्हें उज्जयिनी के राजकवि के पद साथ-साथ प्रसिद्धि, यश, वैभव आदि प्राप्त हो जाता है।

(iv) प्रस्तुत संवाद के आलोक में मल्लिका की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

स्वाभिमानी: मल्लिका जिसका व्यक्तित्व एक तरफ़ भावुक और कोमल भावनाओं वाला है वहीं दूसरी ओर उसने कभी भी अपने आत्म-सम्मान को आहत नहीं होने दिया। मुश्किल से मुश्किल परिस्थिति में होते हुए कभी भी किसी से दया की अपेक्षा नहीं की।

सच्ची प्रेयसी: मल्लिका ने एक सच्ची प्रेयसी के धर्म का निर्वाह करते हुए बिना किसी अपेक्षा के कालिदास की प्रतिभा को विकसित होने के लिए कभी भी अपने प्रेम को बाधा नहीं बनने देती है।

संघर्षशील: मल्लिका का जीवन कालिदास के जाने के बाद तथा अंबिका की मृत्यु के बाद पूर्णतया संघर्ष में ही बीता। आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि मल्लिका को अपने निर्वाह के लिए वारंगना का जीवन व्यतीत करना पड़ा। इतनी कठिन परिस्थितियों के बावजूद उसने कभी जीवन से हार नहीं मानी।

इस प्रकार मल्लिका नाटक की प्रमुख भूमिका का निर्वाह करती है जिनमें इनके अतिरिक्त अनेक गुण विद्यमान हैं जो उसके चरित्र की सफलता में सहायक हैं।

Answer 14.

'आषाढ़ का एक दिन' हिंदी के प्रयोगधर्मी नाटककार मोहन राकेश द्वारा लिखित है। यह एक यथार्थवादी नाटक है। इसमें ऐतिहासिक परिपार्श्व में आधुनिक जीवन के भाव-बोध को व्यंजित किया गया है। कालिदास की कहानी आधुनिक साहित्यकार से बिल्कुल भी भिन्न प्रतीत नहीं होती। आलोचक स्वीकार करते हैं कि कालिदास के साथ समकालीन अनुभव के और भी कई संदर्भ इस नाटक में हैं। ये संदर्भ इसे एकाधिक स्तर पर रोचक बनाते हैं। उसका संघर्ष, कला और प्रेम, सर्जनशील व्यक्ति और परिवेश, भावना और कर्म, कलाकार और राज्याश्रय आदि कई स्तरों को स्पर्श करता है। काल के आयाम को बड़ी रोचकता और तीव्रता के साथ नाट्य रूप दिया गया है। ऊपरी तौर पर इस नाटक में कालिदास की कहानी बताई गई प्रतीत होती है, परंतु वास्तविकता कुछ और है। नाटककार ने इस नाटक में कथा-तंत्र रचते समय ऐतिहासिक वस्तु-योजना को केवल आधार के रूप में रखा है। वास्तव में यहाँ पर कालिदासकालीन परिस्थितियों के माध्यम से आधुनिक समस्याओं का समसामयिक रूप में विवेचन हुआ है। ऐतिहासिक कथानक के आधार पर आधुनिक समस्याओं को प्रस्तुत करना कोई नई बात नहीं है। यही कार्य प्रसाद जी भी अपने नाटकों के द्वारा कर चुके हैं। मोहन राकेश ने भी 'आषाढ़ का एक दिन' के द्वारा यही कार्य किया है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों की विषय-वस्तु की ऐतिहासिकता पर भी विशेष ध्यान दिया है। परंतु मोहन राकेश ने ऐतिहासिक तथ्यों को महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने केवल पात्र एवं वातावरण ही ऐतिहासिक चुने हैं, शेष सभी कुछ आधुनिक है। स्थितियाँ प्राचीन हैं परंतु संदर्भ आधुनिक है। कालिदास भले ही मल्लिका से प्रेम करता है परंतु मूलत: वह है एक कवि ही। उसका एकमात्र और चरम मूल्य साहित्य की रचना करना है। पूरे नाटक में उसका यही अंतर्द्वंद्व दिखाई देता है। यही कारण है कि उज्जयिनी जाकर वह मल्लिका और ग्राम-प्रदेश को भूल जाता है। उज्जयिनी में कालिदास की जीवन-शैली बदल जाती है उसका जीवन उसका अपना जीवन नहीं रहता। प्रियंगुमंजरी से विवाह करने की विवशता, विलासिता में पूरित वैभवपूर्ण जीवन और सृजन शक्ति पर छाए संकट के बादल इसी ओर संकेत करते हैं। स्थिति का ज्ञान होने पर कालिदास स्वयं कहता है-"अधिकार मिला, सम्मान बहुत मिला, जो कुछ मैंने लिखा उसकी प्रतिलिपियाँ देश भर में पहुँच गई परंतु मैं सुखी नहीं हुआ। किसी और के लिए वही वातावरण और जीवन स्वाभाविक हो सकता था, मेरे लिए नहीं था। एक राज्याधिकारी का कार्यक्षेत्र मेरे कार्यक्षेत्र से भिन्न था। मुझे बार-बार अनुभव होता है कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह से उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है और जिस विशाल क्षेत्र में मुझे रहना चाहिए था उससे हट आया हूँ।" राज्याश्रय और राजनीतिक वातावरण में साहित्य-सृजन की गति कुंठित हो जाती है। कालिदास के कथनानुसार-"लोग सोचते हैं, मैंने उस जीवन और वातावरण में रहकर बहुत कुछ लिखा है। परंतु मैं जानता हूँ कि मैंने वहाँ रहकर कुछ भी नहीं लिखा। जो कुछ लिखा है यहाँ के जीवन का ही संचय था।" यह ऐतिहासिक कालिदास की नहीं आधुनिक कालिदास की तस्वीर है। आज महानगरों में उच्च पदों पर आसीन साहित्यकारों की भी यही स्थिति है। वे अपनी आत्मा के सच्चे आज्ञाकारी बनकर उच्च जीवन मूल्यों का जीवन जीते हुए सृजन करना चाहते हैं। परंतु राज्याश्रय का दबाव उन्हें ऐसा करने नहीं देता। वे राजाज्ञा के समक्ष कठपुतली नज़र आते हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि नाटककार के नाट्य लेखन का ताना-बाना भले ही इतिहास से लिया हो परंतु उसकी साज-सज्जा और आत्मा अपनी कल्पना से सजाई है। उसमें आधुनिक नर-नारी सम्बन्धों की समस्या भी उतनी ही प्रबल है जितनी राज्याश्रय की। अस्तित्व की रक्षा करने में कालिदास अंतत: असमर्थ-सा दिखाई देता है।

Answer 15.

कालिदास नाटक के सर्वाधिक प्रमुख पात्र एवं नायक हैं। कालिदास नाटक में आद्यान्त विद्यमान हैं। उनकी काव्य-प्रतिभा तथा व्यक्तित्व का चर्मोत्कर्ष ही नाटक का प्रमुख उद्देश्य है। अतएव नाटक का सारा घटना-क्रम उन्हीं के इर्द-गिर्द घूमता है। महाकवि कालिदास चौथी शताब्दी के वही ऐतिहासिक पात्र हैं जिन्होंने संस्कृत में ऋतुसंहार, मेघदूत कुमार सम्भव, रघुवंश और अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना की है। गुप्त-वंश के सम्राट चन्द्रगुप्त के नवरत्नों में इन्हीं की गणना थी। राजकुमारी विद्योतमा के साथ इन्हीं का विवाह हुआ था। नाटककार ने विद्योत्तमा को प्रियंगुमंजरी के रूप में चित्रित किया है। नाटककार के अनुसार इनका प्रारम्भिक जीवन ग्राम प्रान्तर में बीता। मामा मातुल ने इनका पालन-पोषण किया। इनकी प्रथम रचना 'ऋतुसंहार' के साथ इनकी काव्य-प्रतिभा प्रस्फुटित हुई।

प्रकृति प्रेमी कालिदास को ग्रामप्रान्तर की पर्वत-मालाओं, हरिणशावकों तथा वर्षाऋतु में पर्वत-शिखरों को सहलाती मेघमालाओं से विशेष प्रेम है। वे मेघों के सौन्दर्य में खो जाते हैं, ऐसे दृश्य उनकी भावना को कविता के रूप में परिणत कर देते हैं। मल्लिका के शब्दों में "मैं जीवन में पहली बार समझ पाई कि क्यों कोई पर्वत-शिखरों को सहलाती मेघ-मालाओं

में खो जाता है, क्यों किसी को अपने तन-मन की अपेक्षा आकाश में बनते-मिटते चित्रों का इतना मोह हो रहता है।"

कालिदास का कवि हृदय अत्यन्त कोमल एवं दयापूर्ण है। दन्तुल के बाण से आहत हरिणशावक को वे नि:संकोच भाव से अपनी गोद में उठाकर उसकी प्राण-रक्षा करते हैं। वे उसे दूध पिलाते हैं घृत आदि लगाकर उसका उपचार करते हैं। वे उसके कोमल शरीर को आहत करने वाले की इन शब्दों में भर्त्सना करते हैं- "न जाने इसके रूई जैसे कोमल शरीर पर उससे बाण छोड़ते बना कैसे?" घायल हरिणशावक को गोद में लेकर वे उसे सांत्वना देते हुए कहते हैं "हम जिएँगे हरिणशावक। जिएँगे न ? एक बाण से आहत होकर हम प्राण नहीं देंगे। हमारा शरीर कोमल है, तो क्या हुआ ? हम पीड़ा सह सकते हैं। एक बाण प्राण ले सकता है, तो अँगुलियों का कोमल स्पर्श प्राण दे भी सकता है।"

कालिदास दयालु होने के साथ-साथ निर्भीक भी हैं। कालिदास का पीछा करने वाले दन्तुल का वर्जन करती हुई मल्लिका उनकी निर्भीकता का परिचय इन शब्दों में देती हैं "ठहरो, राजपुरूष। हरिणशावक के लिए हठ मत करो। तुम्हारे लिए प्रश्न अधिकार का है, उनके लिए संवेदना का, कालिदास नि:शस्त्र होते हुए भी तुम्हारे शस्त्र की चिन्ता नहीं करेंगे।कालिदास नितान्त निर्भीक हैं। वे सशस्त्र राजपुरूष दन्तुल को आहत हरिणशावक नहीं देते हैं और बहुत निर्भीकता से कहते हें " यह हरिणशावक इस पार्वत्य-भूमि की सम्पत्ति है, राजपुरूष ! और इसी पार्वत्य-भूमि के निवासी हम इसके सजातीय हैं। तुम यह सोचकर भूलकर रहे हो कि हम इसे तुम्हारे हाथ में सौंप देंगे।

कालिदास में कविसुलभ सहज स्वाभिमान विद्यमान है। आचार्य वररूचि उन्हें राजसम्मान दिलाने ग्राम-प्रान्तर से उज्जयिनी लेने आते हैं किन्तु वे अपने मामा मातुल से स्पष्ट कह देते हैं "मैं राजकीय मुद्राओं से क्रीत होने के लिए नहीं हूँ।" वस्तुत: वे ग्राम-प्रान्तर से अनेक सूत्रों से बँधे हैं, वे उसे छोड़कर उज्जयिनी नहीं जाना चाहते। मल्लिका से कहते हैं, "मैं अनुभव करता हूँ कि यह ग्राम प्रान्तर मेरी वास्तविक भूमि है। मैं कई सूत्रों से इस भूमि से जुड़ा हूँ। उन सूत्रों में तुम हो, यह आकाश और ये मेघ है, यहाँ की हरियाली है, हरिणों के बच्चे हैं, पशुपाल हैं।

कालिदास प्रतिक्रियावादी पुरूष हैं। वह सहज स्वाभाविक जीवन न जीकर प्रतिक्रियाओं में जी रहे हैं। अम्बिका और विलोम उन्हें अच्छी तरह से जानते हैं। वे जानते हैं कि कालिदास कितना भी इंकार करें उज्जयिनी जाएँगे अवश्य और जाते भी हैं। यहाँ तक कि प्रियंगुमंजरी से विवाह भी करते हैं। इन उपलब्धियों को अपने अभाव पूर्ण जीवन की प्रतिक्रिया बतलाते हुए मल्लिका से कहते हैं, "मैं नहीं जानता था कि अभाव और भर्त्सना का जीवन व्यतीत करने के बाद प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर मैं कैसा अनुभव करूँगा।अभावपूर्ण जीवन की वह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। सम्भवत: उसमें कहीं उन सबसे प्रतिशोध लेने की भावना भी थी जिन्होंने जब-तब मेरी भर्त्सना की थी, मेरा उपहास उड़ाया था।"

कालिदास स्वार्थी एवं आत्मकेन्द्रित व्यक्ति हैं। प्रियंगुमंजरी से विवाह करना एवं कश्मीर का शासक बनना उनके अभावपूर्ण जीवन की प्रतिक्रिया थी। अपनी सफ़ाई देते हुए कालिदास फिर अथ से जीवन शुरू करने की बात करते हैं। "परन्तु इससे आगे भी तो जीवन शेष है। हम फिर अथ से आरंभ कर सकते हैं।" कालिदास की सारी सफ़ाई उस समय थोथी लगने लगती है जब वे यह जानकार कि विलोम से मल्लिका की एक बच्ची है, यह कहकर पीछे हट जाते हैं कि समय अधिक शक्तिशाली है।

कालिदास दुर्बल चरित्र के व्यक्ति हैं। वे मल्लिका के प्रति अपने प्रेम को खुलकर स्वीकारने का साहस नहीं दिखाते हैं। काश्मीर जाते हुए गाँव आकर भी मल्लिका से न मिलना उन्हें कमज़ोर और स्वार्थी सिद्ध करता है।

●●●